Publisher

Punna Lal Jain,

Jain SidhanPrakashak Press
9, Bishwakosh Lane, Po Bagh Baza
CALCUTTA

प्रकाशक—

पन्नालाल बाकलीवाल

महामंत्री—भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था

१ विश्वकोष लेन, बागबाजार, कलकत्ता।

मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ,

जैनसिद्धांतप्रकाशक पवित्र प्रेस

१ विश्वकोष लेन. पो० बागबाजार—कलकत्ता।

विषय सूची।

श्रीवीतरागाय नमः ।

स्वर्गीय कविवर पंडित श्रीमद्-रामचंद्रजी विरचित

श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजाविधान ।

मंगलाचरण

दोहा ।

सिधिबुधिदायक कर्मजित, भरमहरन भयभंज ।
चौवीसौ जिन द्यौ मुझै, ज्ञान, नमूं पदकंज ॥ १ ॥

अथ जिन अष्टोत्तर नाम नमस्कार ।

अडिल्ल

या संसारिमझारि असातातप्त हूं,
स्वामिन् ! आयो सरनि हरो दुख, भक्त हूं ।
लखे निस्पृह तुम्हीं भोगतैं नाथजी,
नमूं नमूं तुम पाय जोरिकैं हाथजी ॥ १ ॥
तीर्थंकरपद वंदि जिनाधीसा नमूं,
विभू नमूं सुधमती नमूं जिन दुख वमूं ।
अकलंको नमि नमूं महाबोधक सही,
केवलबोधक जिस्नु नमूं महानंद ही ॥ २ ॥
सदानंद नमि नमूं चिदानंद बुद्ध ही, विस्नु स्वयंप्रभ नमूं चिदोत्तम सुद्ध ही
ब्रह्मा ईश्वर सुज्ञ धनंजयकूं नमूं, शंकर काम सुगत महेश्वर तैं रमूं ॥

स्वभू अनंता भीम जितांतक केवली, स्वयंज्योति भूते स्मृतं जय जीवली
नमूं जिनोत्तम हरी कलाधर शुक्रही, जजूं उमापति चंद्र विधू चतुवक्त्रही
वेदवित नामि नमूं वेद पारंगत तुही, कमलासन श्रीमान वृषभ नाभिहुंसही
नमूं बृहसपति अजित कर्म करता जजूं द्वादस आतम सुद्ध करम हरता भजूं
नमूं केवलालोक स्वयंभू माधव। गौतम भूत नामि नमूं अब्जभू साधव ॥
नमूं नमूं ईसान भूत वत्सल नमूं। स्वामी वासव नमूं अर्धनारी पमूं ॥६॥
जेष्ठ नमूं श्रीकंठ आतमभू ध्यायही, नमूं वेदकरतार निरंजन गायही ॥
समतागतकूं बंदि सुवागीसादि ही, कोविदके नामि पाय नमूं अष्टादिही
नमूं निरंवर सांति निराकांखी तुही, निरारेक नामि नमूं निकल निर्मलसही
संसारापरवराजितके पद वंदि ही, चेतन चेता बंदि धीर सुखकंद ही ॥
बंदू मैं चिद्रूप अकरता निर्गुणो, नमूं महोत्तम पाय मारजित सदगुणो

१ काम।

जितमत्सर नमि नमूं सिद्धि भरता सही, नमूं धर्म करतार धर्मचक्री तुही
वीतराग नमि नमूं विदामान्यौ सदा, सुधर्मा भूतनमि नमूं विधाताजी मुदा
नमूं ज्ञानासिद्धांत निराहारक तुही, स्याद्वाद विधिवेद अब्धेयो सुभसही
मूलमार परकासक तुम बोधाक्षही, द्वैप्रमाण नमि नमूं सुनय गुरुभाषिही
थे अद्वैतवागीस नयोनेता सही, तुही सुनय संसार विधिवेधक सही ॥
नमूं वमूं एकांतमता संभेतही, नमूं निरस्ता पापसमुच्चय थें सही ॥
ये अष्टोत्तर नाम अमल गुण ते भरे, चतुर्वीस तीर्थेस पूजि लखिकैं घरे
संत अष्टोत्तर नाम कंठ ये बुध धरैं, महा सुष्ट सुरधार नरोत्तम उच्चरैं
नर सुरके सुख भोगि चक्रवर्ति थायही, सिद्ध वधूवर होइ सदा सुखपाय ही

दोहा—जे नर पढे त्रिकालही संपति राज्य महान
रामचंद्र जिन सम लहै पावै मोछि निदान ॥ १४ ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

१ ऋद्धिधानोंमें माननीय । २ समुद्र । ३ एकसो आठ ।

समुच्चय चौवीस तीर्थंकरकी पूजा.

आडिल्ल ।

वृषभ आदि अतिवीर चतुर्विंशति जिना ,
ध्यान खडग गहि हते कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुणजुत वसुधरा ठये भव छारिकैं ,
आह्वानन विधि करूं गुणौघ उचारिकैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट् ।
ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् ।

गीता छंद

कर्पूरवासित सरद ससि सम धवल हार तुषारतैं ।

1 आठ ।

मुनीचित सौ विमल सौरभ रवैं मधुकर प्यारतैं ॥
सो हिमनउद्भव नीर सीतल कुंभभरि करि लेयही ।
चउवीस जिन वृषभादिके पद जजूं गुण गण धेय ही ॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभ १ अजित २ संभव ३ अभिनंदन ४ सुमति ५ पद्मप्रभ ६ सुपार्श्व ७ चंद्रप्रभ ८ पुष्पदंत ९ शीतलनाथ १० श्रेयांस ११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धर्म १५ शांति १६ कुंथुनाथ १७ अरनाथ १८ मल्लिनाथ १९ मुनिसुव्रत २० नमिनाथ २१ नेमिनाथ २२ पार्श्वनाथ २३ वर्द्धमान २४ इति चतुर्विंशतिजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मलय नीर कपूर सीतल, वर्तें पूरन इंदही ।
आमोद बहुलि समीरतैं, दिग् रवैं मधुकर वृंदही ॥
सो द्रव्य भवतपनासकारन, कनक भाजन लेय ही ।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुण गण धेय ही ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

धवल सालि[1] अखंड डिंडी, पिंड ना मुक्ता जिसी।
नृप भोग जोग मनोग्य चितहर, गंधतें मधुकर खुसी ॥
पद अखै कारन क्षालि जलतें, उभै[2] करमें लेयही।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुण गण घेयही ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
विमल गंध सुगंध कृत दिग्, कुसम वर्न सुहावने।
ललचाय लोचन घ्राणहारी, मधुप कोरालिया वने ॥
सो समरवाण[3] विध्वंसकारण, अमर तरुके लेय ही।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण घेय ही ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।
सुरहि घीव सुगंधतें, पकवान बहु विधि कीजिये।
रस खड जु दै करि सुवर्न भाजन सद्य मनहर लीजिये ॥

१ चावल। २ दोनों। ३ काम।

सो चारु चरु क्षुध हरन कारन, रसन कूं अति प्रेयही।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण घेयही ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभगदीप उद्योततें तम, मोह पटल विलायही।
स्वपर गुण प्रतिबिम्ब है, जिम हस्त रेख लखावही ॥
सो स्वर्ण भाजन धारि मनिमय ज्ञान कर चखप्रेयही।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण घेयही ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गोसीर संग हुतास धारै, धूम संग मधुकर मिले।
दिग्पाल चिंतै इहै क्षितिधर, नील सेखरतैं चलै ॥
सो धूप वसु विधि जरन कारन, सुवर्न भाजन खेयही।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण घेयही ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल मनोहर पक्क मधुरे, सुर्नसे रलिया बनैं ।
ललचाय लोचन घ्रान रंजन, रसनकूं प्रिय पावनैं ॥
भरि थाल कनकमय अमर तरुके, उभै करमें लेय ही ।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण घेयही ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नीर गंध इत्यादि ले पद , चतुर्विंशति जिनतनै ।
जो जजैं ध्यावैं बंदि सतवै, ठानि उत्सव अति घनै ॥
सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थपदकी श्रेयही ।
सुख 'रामचंद' लहंत सिवके, अर्घकरि प्रभु घेयही ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल ।

वचन सुधासम भाषि सबै जन तोषिया, नृपपदमें धनधान देय बहु

पोषिया । परमातम पद काजि राज तजि मुनि भये, केवल ले भवि बोधि सिवालय थिर ठये ॥ १ ॥

अथ जयमाल ।

दोधक छंद ।

वृषभजिनं जुगवृषदातारं । अजित भवार्णव पार उतारं ॥
संभव संभवके क्षय करता । अभिनंदन सिव मारग भरता ॥ २ ॥
सुमति सुमतिदाता जगत्राता । पद्माकृत पद्मेस विख्याता ॥
जिन सुपास निजपास विदारी । चंद्रप्रभु शसितैं दुतिभारी ॥ ३ ॥
पुष्पदंत आतंक विदारयौ । सीतल जगत समोधि उधारयौ ॥
श्रेय श्रेय सिवके दातारं । वासुपूज्य विद्रुमदुतिसारं ॥ ४ ॥
विमल सकल गुण थान उचारे । लोक अलोक अनंत निहारे ॥
धर्म सुधातम धर्म बतायो । सांति जगत हित बोध सुनायो ॥ ५ ॥

कुंथ सकल संतु सम करि पाले। अर अरि वसु[1] धरि ध्यान प्रजाले॥
मल्लि महामल समर विदारयौ। मुनिसुव्रत आखिजुत मन मारयौ।६।
नमि अष्टादस दोष संघारे। नेमि तजी रजमति पसु पारे॥
सजल जलद तन पास जिनंदा। बंदू वीर सिधारथ नंदा॥ ७॥
ये चउवीस जिनेश्वर सारं। बंदू मन वच तन कृत कारं॥
तीरथंकर भविके भव त्राता। विन कारन जगबंधु विख्याता॥ ८॥
करुणासागर अरज हमारी। जानत ज्ञानथकी प्रभु सारी॥
तातैं कहना कछु नंहि आवै। वांछितार्थ पद तुम करि पावै॥ ९॥

घत्ता।

ये नाम जिनेश्वर दुरितखयंकर, जो भविजन कंठै धरई॥
हुइ दिवि[2] अमरेश्वर पुहमि नरेश्वर[3], 'रामचंद' सिवतिय वरई॥ १०॥

इति समुच्चय जिन चतुर्विंशति पूजा संपूर्ण।

१ जीव। २ स्वर्गमें इंद्र। ३ मध्यलोक में राजा।

अथ श्रीआदिनाथजीकी पूजा ।

अडिल्ल ।

सुषम दुषम थिति मेटि कर्मभू थापिही ।
नृपपद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ॥
ऐसे आदि जिनेस आदि तीर्थंकरा ।
आह्वानन विधि करूं त्रिविधि नमिकैं खरा ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभजिनेश्वर अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ओं ह्रीं श्रीवृषभजिनेश्वर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ओं ह्रीं श्रीवृषभजिनेश्वर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

गीता छंद ।

विमल नीर मनोग्य सीतल, सरद शसि सम स्वेतही ।
आमोदमिश्रित हिमन उदभव, रवै मधुकर प्रीत ही ॥

जरमरन संभव नास कारन, कनक भाजन लेय ही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेय ही ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उद्यान आश्रित नीव अमिली, आदि तरु कटु मिष्ट ही ।
गोसीर गंध समीरतैं लागि, होय चंदन सुष्ट ही ॥
सो मलयजैकसमीर घसि, भवताप नासन लेयही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेय ही ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति०

सरति गंगा नीर सींची, सालि सुभग सुहावनी ।
नृप भोग जोग्य मनोग्य पिंडन, सरल डिंडी पावनी ॥
पद अखै कारण क्षालि जलतैं, पुंज पंच करेय ही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेय ही ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मंदारु मेरु सुपारिजाती, सुमन वर्न सुहावने ।
चंचरीक ध्यावै पवन परसै, चाखि कूं रलियावने ॥
सो कामबाण विध्वंस कारण, कनक भाजन लेयही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेय ही ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरहि घृत पकवान सुंदर, सद्य विविध बनाय ही ।
दीप्ति रस धरि स्वर्ण भाजन, लखे मन ललचाय ही ॥
सो छुधा भंजन रसन रंजन, चारु चरु चाखियेयही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेयही ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय क्षुधावेदनीरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रैलोकके उतपाद वै ध्रुव, सबै एक लखाय ही ।

तम मोह पटल विलाय ज्यों, घन पवनतैं नासि जायही ॥
सो ज्ञान कारण दीप मणिमय, तेज भास्कर लेयही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुगचरण चरचूं धेयही ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
अगर संग हुतास धारे, सुरभितैं मधु ध्यावही ।
व्रज धूम्र लखि दिग्पाल चिंतै, नील क्षितधर आवही ॥
सो अष्ट कर्म विध्वंस कारण, मलय चंदन खेयही ।
श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं धेयही ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
मधुर पक्व फलौघ सुंदर, ललित वर्ण सुहावनै ।
सुखदाय लोचन क्षुधा मोचन, घ्राणरंजन पावनै ॥
फल मुक्ति कारन अमर तरुके, थाल भरि करि लेयही ।

श्रीआदिनाथ जिनेंद्रके, जुग चरण चरचूं येयही ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध इत्यादि वसुविधि, अर्घकरि पद जिन तनै ।

जे पूजि ध्यावैं वंदि सतवैं, ठानि उत्सव अति घनै ॥

सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थ पदकी अयही ।

सुख "रामचंद्र" लहंति सिवके, आदि जिनवर येयही ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ . चौपाई ।

तजि सरवारथ सिद्धि विमान । दोयज साढ असित भगवान ।

मरुदेव्या उरमें अवतार । लयो जजूं गुणचित आवेकार ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय आषाढमासकृष्णपक्षे द्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय महार्घं०

नौमी चैत असित जन्मये, आसन कंप सुरानिके थये ।

पूजे सुर गिरि सनपन ठानि, वृषभनाथ पूजूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत सुत जुग तिय कन्यादोय । तजि उपाधि सब मुनिवर होय ।
ध्यान धर्‌यो नौ चैत असेत । पूजे मैं पूजूं सिवहेत ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

फागुन असित इकादसि ज्ञान, उपज्यो धर्म कह्यो भगवान ।
चतुर निकाय देव नर नारि, पूजे मैं पूजूं भव तारि ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुण कृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणसहिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०

माघ असित चौदसि विधिसैन, हने मोक्ष पायौ सिवदैन ।
सुर नर खग कैलास सुथान, पूजे मैं पूजूं धरि ध्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०

अथ जयमाला ।

अडिल्ल ।

आदि जिनेश्वर आदि लब्धि केवलमई ।
समोसरन धनदेव रच्यौ को बरनई ॥
द्वादस जोजन ठीक महा सोभा धरैं ।
वीस सहस सोपान सुरासुर जै करैं ॥

पद्धरि छंद ।

जय धूप साल पण रतन चूर, ढिग मानसथंभ उद्योत सूर ॥
चउ वापी मधि अंबुज सुहाय, लखि मानीको मद भंग थाय ॥ १ ॥
जय खाई मधि नीरज मराल, वन कल्पलता बहु कुसुम जाल ।
प्राकार रतनमय तेज भान, चउ गोपुर प्रति द्वै धूप दान ॥ २ ॥
सत सत तोरण द्वै नाट साल, सुरतिय गावैं जिनगुण विशाल ॥
वन सुरतरु चैत्य अशोक आम, धुज बरन बरन वन सर्वठाम ॥ ३ ॥

चामीकर वेदी चव दुवार, वन च्यारि फेरि शोभा अपार ॥
कलधौत सार दूजो उतंग, चव गोपुर पूरव उत सुचंग ॥ ४ ॥
चउ वनवेदी वन चार चार, कहुं नंदी परवत गेह सार ॥
सिद्धारथ द्रुम मनहर सरूप, जिन बिंबांकित बहु पुनि सरूप ॥ ५ ॥
कहुं लता भवन गावै कल्यान, बहु बाजै बीन मृदंगतान
नाचैं किंनर गंधर्व गीत, जिनगुण गावैं अपछर संगीत ॥ ६ ॥
सब द्वारपाल कर गदाऽनूप, कर जोरि चलैं सुर खचर भूप ॥
फिरि फटिक कोट सोभा अमान, चउ गोपुर मंगल द्रव्य जान ॥७॥
मधि सभा बनी द्वादस अनूप, सित चंद्रकांति मणिको सुतूप ॥
जय गंधकुटी आमोद सार, धुज सिखर कलस उद्योतकार ॥ ८ ॥
जय आदि पीठ षोडस सिवान, मनु षोडस भावनके निधान ॥
जय दुतिय पीठ बसु गुण चढाय, जय त्रितिय पीठ वसु भव लखाय।

जय सिंघपीठ परि कंवल सार, जिन अंतरीक आनन सु च्यार ॥
जय भामंडल छबि कोटि भान, अरु छत्र तीनतैं ससि लजान। १०।
जय तरु अशोकतैं शोक दूर, जखि चवर करैं चउसठि हजूर ॥
है मागधि भाषा कोस च्यार, सुर पुष्पवृष्टि शोभा अपार ॥ ११ ॥
नभ दुंदभि बाजैं अति गभीर, अध द्वादस कोटिन शब्द भीर ॥
सुर असुर करैं जय नंद नंद, चालै समीर अति मंद मंद ॥ १२ ॥
जय देव अनंत चतुष्ट धार, दरसन सुख वीरज ज्ञान सार ।
जय तीन काल दिव ध्वनी होय, सुनि समझि जाय दस प्रान सोय ॥
भू दर्पण सम कंटक न कोय, षट ऋतु फल फूल सुगंध होय ॥
जन्माविरोध प्राणी न रोष, पद कमल रचैं जखि सर्व तोष ॥ १४ ॥
प्रभु गुण अनंत भाषे न जांय, मैं अल्प बुद्धि सुरगुरु थकाय ॥
मैं अरज करूं करि धारि सीस, मुझ तारि तारि भवतैं जगीस । १५।

घत्ता ।

इह जिनगुण सारं, अमल अपारं, जो भवि जन कंठै धरई ।
हनि जर मरणावलि, नासि भवावलि, 'रामचंद' शिवतिय वरई ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीआदिनाथ जिनपूजा समाप्त ।

अथ श्रीअजितनाथजीकी पूजा ।

अडिल्ल ।

सकल कर्म हानि आजित जिनं सिव खेतमैं ।
गिरि समेदतैं गये तिनोंके हेत मैं ॥
आह्वानन संस्थापन अरु सनाधि करूं ।
मन वच तन करि सुद्ध बार त्रय उच्चरूं ॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र । अवतर अवतर संवौषट् । ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ

जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

त्रिभंगीछंद ।

गंगा समनीरं, प्रासुकसीरं, कनकरतनमय भृंग भरौं ।
जर मरन पिपासं, हरि सब त्रासं, मन वच तन त्रय धारकरौं ॥
श्रीअजितजिनेस्वर, पुहमिनरेस्वर, सुरनरखगवंदित चरणं ।
मैं पूजूं ध्याऊं, गुण गण गाऊं, सीस नवाऊं अघहरनं ॥ १

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

मलियागर ल्यावें, अगर मिलावें, केसरयुत घनसार घसैं ।
भवताप निवारन, सिव सुख कारन पूजि जिनेश्वर पाप नसैं ॥ श्रीअ०

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा ।

तंदुल सु अखंडित, सौरभिमंडित, मुक्तासम जिनपद आगें ।
करि पुंज पियारी भव भ्रमटारी लहे अखैपद भय भागें ॥ श्रीअ०

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

देखत ही सोहै सब मन मोहै कुसुम कनकमय रतन जड़ा ।
सुर नर पशु सारे काम विदारे पूजत बाण मनोज उड़ा ॥
श्रीअजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग बंदित चरनं
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति मिष्ट मनोहर घेवर गूजा फेनी मोदक थाल भरूं ।
बहु छुधा सतायो पूजन आयो हरो वेदना अरज करूं ॥
श्रीअजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग बंदित चरनं ।
मै पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि कनकरकावी. रतनसुदीपक. जोति ललितकरि प्रभु आगे ।

सब मोह नसावै ज्ञान बधावै लखि आयो परबुधि भागे ॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुर नर खग वंदित चरनं ।
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
कृष्नागर लेऊं जिन ढिग खेऊं गंध दसोंदिसि धावत है ।
बहु मधुकर आवें परिमल भावें अष्टकर्म जरि जावत हैं ॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुर नर खग वंदित चरनं ।
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्रायाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा :
अति मिष्ट मनोहर नैननके हर उत्तम प्रासुक फल लावैं ।
श्रीजिनपद धारे चउगति टारे मोक्ष महाफल लहु पावैं ॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुरनर खग वंदित चरनं ।

मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभ निरमल नीरं गंधगहीरं तंदुल पहुप सु चरु ल्यावैं।

फुनि दीपं धूपं फलसु अनूपं अरघ "राम" करि गुण गावैं॥

श्रीअजित जिनेसुर पुहमि नरेसुर सुरनर खग वंदित चरनं।

मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ।

दोहा।

विजै विमानथकी चये, विजया गर्भमझार।

जेठ अमावसि अवतरे, जजूं भवार्णवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ शुकुल दसमी सुरा, जन्म जिनेस निहार ।
सुर गिरि सनपन करि जजे, मैं पूजूं पदसार ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणसहिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ शुकुल दसमी धर्‌यो- तप वनमें जिनराय ।
सुर नर खग पूजा करी- हम पूजैं गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पोह सुकल एकादसी, केवलज्ञान उपाय ।
कहो धर्म पदजुग जजे, महाभक्ति उर लाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत सुकल पंचमि विषें, अष्ट कर्म हनि मोख ।
अजित समेदाचल थकी, गए जिजूं गुण घोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला.

दोहा ।

सकल तत्त्व ज्ञायक सुधी, गुण पूरन भगवान ।
धरम धुरंधर परम गुरु, नमूं नमूं धरि ध्यान ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

जय जय श्रीअजित जिनेस देव, तुम चरन करूं दिनरैन सेव ॥

जय मोक्षपंथ दातार धीर, जय कर्मसैल-भंजन सुवीर ॥ १ ॥
जय पंच महाव्रत धरनहार, तजि राज्य सबै वन ध्यान धार ॥
जय पंच समितिपालक जिनंद, त्रय गुप्ति करन वसि धरमकंद ॥ २ ॥
धरि ध्यान भए चिद्रूप भूप, गिरि मेरु समानौ अचल रूप ॥
जय घाति करमको नास ठान, उपज़ायो केवलज्ञानभान ॥ ३ ॥
तव समवसरन रचना बनाय, हरि[1] हरिष्यो मन आनंद पाय ।
कुछ करिहों वरनन भक्ति भाय, जिम बोलत है पिक अंब खाय ।४।
जय पंच रतनमय धूलसाल, चउ गोपुर मन मोहन विसाल ।
जय मानसथंभ सुरंग चंग, लखि मानी नावैं आय अंग ॥ ५ ॥
चउ वापी निर्मल नीर सार, सुभ बोलत जहँ चकवा मरार[2] ।
जल भरी खातिका गिरँद[3] रूप - पुष्पनिकी बाँडी[4] अति अनूप ॥ ६ ॥

१ इंद्र । २ हंस । ३ चारो ओर । ४ वाटिका ।

सुभ कोट दिपैं जिम तेज भान. नृतसालामें गावैं कल्यान ।
पुनि वन सोभा वरनी न जाय. राजत वेदी बहु धुज उडाय ॥ ७ ॥
फिरि कोट हेममय सुघरसार. बहु कल्पद्रुम वन सोभकार ।
नव रतनरासि सोभित उतंग, ऊंचे मंदिर जहं बहु सुरंग ॥ ८ ॥
फिर फटिक कोट सोभा अमान, मंगल द्रव्यादिक धूप दान ।
मधि द्वादस बनिय सभा अनूप, मुनि सुर नर पशु बैठे सुभूप ॥ ९ ॥
विचि तीन रतनमय तुंग पीठ, वेदी सिंहासन कमल ईठ ।
जिन अंतरीक[1] आनन[2] सुचार, धर्मोपदेश दे भव्यतार ॥ १० ॥
सिर छत्र तीन उद्योतकार, तरु है अशोक जन शोक टार ।
गंधोद बिंदु सुर पुष्प विष्ट, नभि दुंदुभि बाजे मिष्ट मिष्ट ॥

१ आकाश । ५ मुख ।

अति धवल चंवर चौंसठ ढुराय, भामंडल छवि वरनी न जाय।
ऐसी विभूति जिनराज देव, नमि नमि फुनि फुनि करहौं जु सेव।१२।

घत्ता।

श्रीअजित जिनेसुर, नमत सुरेसुर. पूजें खेचर[1]गण चरणं।
नरपति बहु ध्यावें, सिव पद पावें 'रामचंद्र' भवभयहरणं॥ १३॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री अजितनाथजीकी पूजा संपूर्ण।

अथ श्रीसंभवनाथपूजा।

दोहा।

संभव करम हने सबै, सिव समेदतैं पाय।
आह्वानन स्थापन करूं, मम सनिहति भव आय॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीशंभवनाथजिनेंद्र अत्रावतर अवतर। संवौषट्। ओं ह्रीं श्रीशंभवनाथ-

---

[1] विद्याधरोंका समूह।

जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं श्रीशंभवनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्नि-हितो भव भव। वषट्।

त्रिभंगी छंद।

मैं तृषा सतायो, अति दुख पायो, जल लायो प्रभु तुम आगे।
भरि कंचन झारी, धार उतारी, जन्म मृती[1] ततछिन भागै॥
संभव भव तोरयो, मोह मरोर्यौ, जोर्यो आतमसों नेहा[2]।
हूं पूजूं ध्यावूं, सीस नवावूं तारि तारि विलम जु केहा॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीशंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा। जलं।

भव ताप सतायो, तुम ढिग आयो, चंदन ल्यायो अति सीरा[3]।
हो सिद्ध निरंजन, भवभयभंजन, तुम पूजूं हरि भवपीरा[4]॥

१ मरण। २ प्रीति। ३ बहुत ठंडा। ४ दुःख।

संभव भव तोरयौ, मोह मरोर्‌यौ जोर्‌यौ आतमसों नेहा।
हूं पूजूं ध्यावूं- सीस नवावूं तारि तारि बिलम जु केहा॥
ओं ह्रीं शंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
भव वास वसेरा- तोरो मेरा. मैं चेरा तुम गुण गावूं।
तंदुल सुअखंडित, सौरभि मंडित, पूज करूं शिव पद पावूं॥
संभव भव तोर्‌यो, मोह मरोर्‌यो जोर्‌यो आतमसों नेहा।
हूं पूजूं ध्यावूं सीस नवावूं तारि तारि विलम जु केहा॥ ३॥
ओं ह्रीं श्री संभवनाथ भगवज्जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
यो काम महाबल, वसि करि लीनों हरि हर प्रथिके सव सारे।
मै पूजन आयो, प्रासुक लायो, कुसुम मदनसर हरि प्यारे॥ संभव०।
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह छुध्या हत्यारी अति दुखकारी मोहि सतावत है तातैं।
वर मोदक ल्याओ पूजन आयो, हरो वेदना प्रभु यातैं॥
संभव भव तोर्‍यो मोह मरोर्‍यो जोर्‍यो आतमसौं नेहा।
हूं पूजूं ध्याऊं सीस नवावूं तार तार विलम्ब जु केहा॥ ५॥
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोह महातम छाय रह्यो मम ज्ञान हन्यौ अति दुख दीनो।
मणि दीपक ल्याओ. ध्वांत नशायो पूजत पद चेतन चीनो॥ संभव॰
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ये दुष्टजकर्म बडे अधर्म दुख देवें कवलौं गावैं।
कृस्नागरधूपं मलय अनूपं पद खेवें लहु जरि जावें॥ संभव भव॰॥
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष महा मग रोक रह्यो, अंतराय कर्मबल मो रोधा।
फल प्रासुक लावूं तोहि चढावूं मोक्ष मिलावो हो बोधा॥ संभव॰

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये निर्वपामीति फलं स्वाहा ।

निर्मल नीरं, गंध गहीरं, तंदुल पुष्पं चरु लायो ।
मणिदीपं धूपं फल सु अनूपं अरघ "रामचंद" करि गायो ॥ सं॰

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याण अर्घ ।

दोहा ।

फाल्गुण सुदि अष्टमि चये नव ग्रीवकतैं इंद ।
सेनादे उर अवतरे जजूं धर्मक कंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय महार्घं॰ ॥ १ ॥

कातिक सुदि पूनिम सुरा संभव सुर गिरि लेय ।
जन्म महोत्सव करि जजे हम पूजैं गुण ध्येय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं कार्तिकपूर्णमास्यां जन्ममंगलमंडिताय संभवनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति॰

पूनिम मगसिर सुकलही जगतराज्य ताजि देव।
तप धरि मुनि है वन वसे जजूं चरण वसुभेव ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णमास्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय महार्घं नि॰।

चौथि असित कार्तिकविषैं ध्यान खड्ग गहि वीर।
घाति हानि केवल लयो जजूं ज्ञान हित धीर ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति॰

चैत सुकल षष्ठमि विषै शेष करम निरवार।
मोक्षवरांगनपति भये जजूं गुणौघ उचार ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी॰

अथ जयमाल।

दोहा—संभव निज संभव हर्यो मो संभव हरि नाथ।
करूं वीनती सुमरि गुण नमूं सीस धरि हाथ ॥ १ ॥

अडिल्ल।

काल तूर्य गयो पौंण सेष रह्यो पावही, उपजे संभवनाथ जगतके रावही।
मात्ता सेनादेवि जितारि पिता नमूं, स्रावंती भवथान पूजि अघकूं वमूं॥

धनुष चारसौ तुंग कनकवपु सोहनो,
साठि लख पूरव आयु अश्व चिह्न मोहनो।
वंश इक्ष्वाकुसिंगार पूर्व लख तप कियो,
घाति कर्म चउजारि ज्ञान केवल लियो॥ ३ ॥
समोसरन धनदेव रच्यौ शोभा घनी,
ग्यारा योजन बीच एक सतपन गनी।
बीच महात्रय पीठ कमल पर जिन लसै,
अंतरीक मुख चार छत्र ससिकूं हंसै॥ ४॥
चौसठि चंवर जखेश करें अतिही छजै,

साढा द्वादस कोडि जाति दुंदभि बजै ।
दिव्य धुंनि करि भवि तारे भवतैं नाथजी,
मोकूं भवतैं तारि देव ! गहि हाथजी ॥ ५ ॥
इहसंसार मझारि महादुःख मैं सहूं,तुमतैं छाने नाहिं कहा मुखतैं कहूं ।
यातैं कारज मोहि सरै तुमतैं सही,औरनतैं कहा काज सरनि तेरी गही ॥
तेरो नाम अपार उदधि नवका भली,तेरो नाम उचारि होहि सबही रली
तेरो नाम जपंत उरग ह्वै माल ही, तेरो नाम जपंत सिंघ ह्वै स्याल ही ॥
तेरो नाम जपंत रोग सबही टरैं, तेरो नाम जपंत रिद्धि घरमैं भरै ।
तेरो नाम जपंत ज्वाल जल पेखिये, तेरो नाम जपंत दुरद मृग देखियै
तेरे नाम पसाय श्वान सुर थाययो,
मो मन मैं तुम नाम भलीविधि आययो ।
तो अब चिंता कौन मोछि पद पायस्यौं,
सुर पदकी कहा बात भृती ह्वै चायस्यौं ॥ ९ ॥

दोहा।

संभव जिनकी थुति इहै जो पढिसी मनलाय।
"रामचंद" सुख शिव भले पावै सहज सुभाय॥
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीसंभवनाथपूजा समाप्त।

अथ श्रीअभिनंदननाथपूजा।

अडिल्ल।

घाति हने लहि ज्ञान बोधि भवगिरि ठये.
हनि अघाति अभिनंद सिवालै थिर भये।
आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उच्चरूं,
संवौषट् ठः ठः वषट् त्रियविध करूं॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेंद्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

त्रिभंगी छंद।

उत्तम जल प्रासुक, अमल सुवासित, गंगादिक हिम तटहारी ।
तुम पूजन आयो, अति सुख पायो, हरा जनम मृति दुखकारी ॥
अभिनंदन स्वामी, अंतरजामी, अरज सुनो अति दुख पाऊं ।
भव वास वसेरा, हरि प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाऊं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

शुभ कुंकुम ल्यावै, चँदन मिलावै, अगर मेलि घनसार घसै ।
श्रीजिनवरआगै, पूज रचावै मोहताप तत-काल नसै ॥ अभि० ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मुकतासम तंदुल, अमल अखंडित चंद किरन सम भरि थारी।
करि पुंज मनोहर, जिन पद आगैं लहौं अखै पद सुखकारी ॥ अभि०॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

मंदार जु सुंदर, कुसुम सुल्यावें, गंध लुब्ध मधुकर आवैं ।
जिनवर पद आगैं, पूज रचावैं समरवान नासिकैं जावैं ॥ अभि० ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नानाविध चरु लै मिष्ट मनोहर, कनकथाल भरि तुम आगैं ।
पूजन कूं ल्यायौ, अति सुख पायो, रोग छुधादि सबै भागैं ॥अभि०॥
ओं ह्रीं अभिनंदनजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुझ मोह सतायो अति दुख पायो ज्ञान हरयो करिकै जोरा।
मणि दीप उजारा तुम ढिंग धारा हरो तिमिर प्रभु जी मोरा ॥ अभि०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

किसनागर ल्यावैं, अगर मिलावैं, भरि धूपायन प्रभु आगैं।
खेये शुभपरिमलतैं, मधु आवैं करमजरैं निज सुख जागै ॥ अभि०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल उत्तम ल्यावें, प्रासुक मोहन गंध सुगंधे रसवारे।
भरि थाल चढावें, सो फल पावैं मुक्ति महा तरुके प्यारे ॥ अभिन०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

करि अर्घ महाजल, गंध सु लेकरि, तंदुल पुष्प सु चरु मेवा।
मणि दीप सु धूपं, फल जु अनूपं "रामचंद" फल सिवसेवा ॥ अभिन०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंच कल्याणक अर्घ।

दोहा—अष्टमि सित बैसाख तजि, विजय विमान सुरिंद।
अवतारि गर्भ सिधारथा, लयो जजूं गुण वृंद ॥ १॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०

जन्म माघ सुदि द्वादसी, सुरपति लखि इत आय ।

सनपन करि सुर गिरि जिजे, हम जजि हैं गुण गाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय महार्घं नि०

श्वेत माघ द्वादसि दिना, अभिनंदन धरि धीर ।

जगतराज तृनवत तज्यो, जजूं चरन शिवसीर ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोभूषणभूपिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

पौष सुकल चउदसि हने, घाति करम जिनदेव ।

कह्यौ धर्म केवलि भये, जजूं चरण जुग एव ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्रायार्घं निर्व० ।

सित षष्टमि वैशाख सिव, गये सेष हनि कर्म ।

जजूं चरनजुग भक्ति करि, देहु देव निज धर्म ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्रायार्घं निर्व० ।

अथ जयमाला।

दोहा।

अभिनंदन आनंदके, दाता जगत विख्यात।
करूं नमन त्रिविधा सदा, मुझ आनंद करि तात॥ १॥

पद्धरि छंद।

जय अभिनंदन आनंद कंद। जय तात स्वयंवर धर्मवृंद॥
जय देवि सिधारथा उदर सार। अवतार अजोध्यापुरमझार॥
वपु कनक चाप त्रियसै पचास। इक्ष्वाकुव्योममधि रवि उजास॥
प्रभु पूरव आय पचास लख्य, तप धारि हने चउघाति अख्य॥
केवल उत्सव सुर असुर आय, जय शब्द ठानि कीन्हौं अघाय।
समवादि भूति अद्भुत अपार, रचि थुति आरंभी इंद्रसार॥४॥
रसना सहस करिकैं अनंत, तब पार लहैं नहिं गुण अनंत।

मैं अल्प बुद्धि किम करुं बखान, तुम भक्ति जु प्रेर्यौ देव आन ।
जय तीन जगत पतिके सुनाथ, सुर गुरू नमूं मैं जोरि हाथ ।
जगस्वामिनके तुम स्वामि देव, जगपूज्यनिके तुम पूज्य एव
तुम ज्ञातामैं सर्वज्ञ ईश, तपसिनमैं तुम तपसी गिरीस ॥
तुम जोगिनमैं जोगी महंत, हो पर्म जिनेसुर जिन कहंत ॥ ७॥
जय विश्व उधारन दुख निवार, निरवांछिहितू जगके अधार।
जय उभै श्रीराजित अपार, निरग्रंथ महा भुविके मझार ॥८॥
जय सची आदि करि सेव्य पांय, स्तवूं महान ब्रह्मचारणाय ।
तुम सकल द्रव्य परजय लखान, जुगपतहिं चरण निर्मुक्ति ज्ञान
तुम दरसन रविकरि तम अज्ञान, जुत पाप नसै प्रगटै कल्यान।
हूं नमूं चरन जुग जोरि पान, गुणसिंधु सरन तुम नाहिं आन॥
हूं धन्य भयो तुम निकट आय, मो जीतव धनि तुम चरन पाय।

तुम धन्यनाथ किरपानिधान, "चंदराम" कहैं दे मुक्ति थान ॥८

घत्ता।

इह थुति अभिनंदन, पाप निकंदन, जो भवि गावैं सुर धरई।
ह्वै दिवि अमरेसुर, पुहमि नरेसुर, लहु पावइ शिवसुखवरई ॥
ओं ह्रीं अभिनंदनजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्री अभिनंदनजिनपूजा समाप्ता ॥

अथ श्रीसुमतिनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

संवौषट् ठः ठः वषट् त्रिविधा करूं,
आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उच्चरूं।
सुमति जिनेस्वर पाय जजनके काजही,
गिरि-समेद कल्याणक मोछ विराजही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथभगवज्जिंनद्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथभगवज्जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथभगवज्जिंनद्र अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् ।

गीता छंद ।

अति सुच्छ उत्तम नीर प्रासुक, मिश्र गंध मिलायये ।
भरि हेम झारी पूजि जिनपद, जनम मरन नसायये ॥
श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यौ, मुझ पूजिहूं वसु भेवही ।
में अनंत काल अकाज भटिक्यो, विना तेरी सेवही ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा॰

कपूर केसर अगर लेकर, घसौं चंदन बावना ।
जिन पूजि भविजन भावसेती, मोह ताप नसावना ॥ श्रीसुमति॰ ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल सुनिर्मल लेहु दीरघ, जानि मुक्ताफल यही।
जिन चरण आगैं पुंज करियै, अखैपद पावै सही ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथभगवज्जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मण वरण कुसुम सुगंध प्रासुक, अमर तरुके ल्यायये।
जिनपद कमल आगै चढोडे[1], मदन वाण नसायये ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदक मिष्ट घेवर, कनक थाल भराइये।
जिन पूजि भव्य नैवेदि सेती, छुधा रोग नसाइये ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज मणिमय दीप सुंदर, करत तमको नासही।
जिन पूजि भविजन भाव सेती, होय ज्ञान प्रकासही ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ चढाना

कर्पूर किस्नागर सुचंदन, धूप दहन हुतासनं।
बरखेय भवि जिनचरण आगै, अष्ट कर्म विनासनं ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वादाम श्रीफल चारु पूंगी, मधुर मनहर ल्यायये।
पद कमल जिनके पूजिते ही, मोछिके फल पायये ॥ श्रीसुमति० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप ही।
वर धूप फल लै अर्घ कीजे, "रामचंद्र" अनूप ही ॥
श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यौ मुझ, पूजि हूं वसुभेव ही।
मैं अनंत काल अकाज भटिक्यौ, विना तेरी सेवही ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ ।

दोहा—वैजयंत विमान तजि, सावण दुतिया स्वेत ।
लयो जजूं सिव हेत ॥ १ ॥

मंगला उर अवतार जिन, लयो जजूं सिव हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

चैत सुकल एकादसी, जन्म महोत्सव इंद ।
सनपन[1] करि सुरगिर जजे, जजूं सुमति गुणवृंद ॥ २ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणशोभिताय श्रीसुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

नौमी सित वैसाख तप, धरयो मोह रिपु चूर ।
नगन दिगंबर वन वसे, जजूं सुमति गुण भूरि[2] ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं वैसाखशुक्लनवम्यां तपोभूषणभूषिताय श्रीसुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

चैत्र सुकल एकादसी, केवल ज्ञान उपाय ।
कह्यो धर्म दुविधा मुदा[3], जजूं चरण गुणगाय ॥ ४ ॥

१ अभिषेक २ बहुत ३ हर्ष ।

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानभूषणभूषिताय श्रीसुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

एकादस सित चैतकी, शेष करम हनि मोख।

सिखर समेद थकी गये, जजूं चरण गुणघोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षकल्याणभूषिताय श्रीसुमतिनाथाय महार्घं निर्वपामीति

अथ जयमाला ।

दोहा ।

सुमति सुमति दायक सदा, घायक कुमति कलेस ।

लायक सिव पद देनके, ज्ञायक लोक अलेस ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

जय सुमति चरण दुति नख महान । जय करमभरमतमहरन भान ।

जय मेघपिता चितपदम लाल । विकसावन कूं रवि प्रातकाल ॥ २ ॥

जय मात सुमंगला उदर सार । अवतार लयो त्रय ज्ञान धार ।

दुति कनक धनुष त्रियसै सु काय। चालीस लक्ख पूरव सु आय। ३।
जय वंश इक्ष्वाकु सिंगार देव। तजि राज धर्यो तप सुष्ट एव।
जय पंच महाव्रत धरन धीर। जय पंच सुमति पालन सुवीर॥ ४॥
जय तीन गुप्ति वसिकरण सूर। गहि ध्यान खडग चउ घाति चूर॥
केवल उपजें समवादि सार। रचि इंद करी थुति नांहिं पार॥ ५॥
जय निराभरण भासुर अपार। निरआयुध निर्भै निरविकार।
निरमोह निराकृत सर्वदोष। निरईह जगत हित धर्मघोष॥ ६॥
जय कृपानाथ प्रतिपाल सिष्ट। जिनवांछितार्थ फलदाय इष्ट॥
जय भव्य भवार्णव तार देव। दुःकर्मदाघ जल वृष्टि एव॥ ७॥
तुम मोक्ष मार्ग दरसाव भान। भवसंततिद्रुम जालन कृसान॥
तुम गुणगणको नहिं पार नाथ। हूं करूं वीनती जोरि हाथ॥ ८॥
भव तारण विरद निहारि देव। हूं सदा करूं तुम चरन सेव॥

हो करुणानिधि जगपति अवार। सिव देहु अखै सुखको भंडार ॥१॥

घत्ता।

इह जिन गुणमाला, परम रसाला, 'रामचंद' जो कंठ धरै।
ह्वै सिद्ध निरंजन, भवभय भंजन, मोखरमा ततकाल वरै॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति सुमतिनाथजिनपूजा समाप्ता।

अथ श्रीपद्मप्रभजिनपूजा।

अडिल्ल।

पदम करम हनि केवल लै भवि बोधिये।
कारि अघाति निरमूल सिखरतें शिवगये॥
आह्वानन संस्थापन मम सनिहित करूं।

संवौषट् ठः ठः वषट् वारत्रय उच्चरूं ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्र ! अत्रावतरावतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव ! वषट् ।

चाल जोगीरासा ।

कनक रतनमय झारी भरि करि प्रासुक नीर सुल्याऊं ।
जन्मजरामृति नाशनकारन श्रीजिन चरन चढाऊं ॥
पदम जिनेश्वर पदमादायक घायक हो भवकेरा ।
ह्वै चेरा प्रभु तुम गुण गाऊं पाऊं गुण मैं मेरा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति ।

केसर अगर कपूर सुलैकरि चंदन मेलि घसावैं ।
भव आताप निवारन कारन श्रीजिनपूज रचावैं ॥ पदम०

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछित अखंडित दीरघ उज्वल, चंद्र किरन सम ल्यावैं ।
श्रीजिनवर पद पूजि मनोहर, तुरत अखै पद पावैं ॥ पदम जिने० ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच वरनमय कुसुम मनोहर, प्रासुक चक्खु सुहावैं ।
गंध सुगंधी मधुकर आवैं, पूजत काम नसावैं ॥ पदम जिनेश्वर० ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर मिष्ट मनोहर मोदक फैनी गूजा ल्यावैं ।
श्रीजिनवर पद चरुतैं पूजैं रोग छुधा नाशि जावैं ॥
पदम जिनेश्वर पदमादायक, घायक हो भव केरा ।
है चेरा प्रभु तुमगुण गावूं, पावूं मैं गुण मेरा ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप रतनमय ध्वांत विनाशन कनक रकावी धारैं
श्रीजिनवर पदपूजत ही नर मोह मिथ्यात्व विदारैं ॥ पदम०

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अगर कपूर सुगंधित धरि धूपायण माहीं।
श्रीजिनवर पद आगैं खेये अष्ट करम जरि जाहीं॥ पदम जि॰

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी एला आदि मगावैं।
श्रीजिनवरपद फलतें पूजें मुक्ति महाफल पावैं। पदम जिनेसुर॰ ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सु चरु ले दीप सु धूप मगावैं।
उत्तम फल ले अर्घ बनावैं "रामचंद" सुख पावैं॥ पदम जिनेसुर॰॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ।

ऊपरि ग्रीवकतें चये षष्ठीं माघ असेत।

गर्भ सुसीमा अवतरे जजूं त्रिविध धरि हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

कार्तिक तेरसि कृष्ण ही जनमे श्रीजिनराय ।

इंद्र महोत्सव करि जजैं, जजिहूं तूर बजाय ॥२॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

महाभूति साम्राज्य तजि, कार्तिक तेरसि स्याम ।

बसे अरनि तप धारि जिन जजूं चरन अभिराम ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

पूनिम चैत हने अरी घाति कर्म धरि ध्यान ।

केवल ज्ञान उपाइयो, जजूं पद्म भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

चौथि कृष्ण फागुन विषैं हनि अघाति जिनराय ।

मोक्ष समेद थकी गये जजूं चरण गुण गाय ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणशोभिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जयमाला ।

दोहा ।

पदमनाथके पद पदम, महाअरुन अविकार ।
नमू उभैकर सीस धरि, देहु देव मति सार ॥ १ ॥

पद्धरि छंद ।

जय पदमनाथ कौसंविनाथ । ऊपरि ग्रीवक तजिकें विमान ।
आयेह सुसीमा गर्भसार । वदि माघ षष्ठि चित्रा सुतार ॥ २ ॥
वदि कातिक तेरसि जन्म एव । आये तित चतुर्निकाय देव ।
जय नंद नंद करते अपार । गिरि मेरु कियो अभिषेक सार ॥ ३ ॥
धरि पदमनाम हरि पूजि पाय । नृप धारणके दरवार लाय ।

बहु नृत्य कर्‌यौको करै बखान। लखि मगन भये पित मात आन॥
जिन वृद्धिभये तन अरुणभान। धनु दोय सतक पंचास जान।
नृप बाल पूर्व उनतीस लक्ष। सुख मगन भये तजि राजदक्ष ॥५॥
षट् वर्ष कर्‌यो तप घोर वीर। ऋतु ग्रीषमभें गिरि सिखर धीर॥
रवि किरन तपै मनु अग्निज्वाल। धरि ध्यान खडे निरभै विशाल॥
ऋतु पावस तरुतल चतुरमास। धरि जोग खडे अहिलिस डांस॥
ऋतु शीत तरंगनि ताल वास। बाजै समीर अनुभव विलास॥ ७॥
धरि ध्यान अग्नि चउ घाति जारि। लहि ज्ञान चराचर सब निहारि
समवादि सहित करिकैं विहार। धर्मोपदेस दे भव्य तार॥ ८॥
षट् वर्ष घाटि लख पूर्वज्ञान। सब आयु पूर्व लख तीस जान॥
फागुन वदि चौथि समेदथान। हनिके अघाति पहुंचे निर्वान॥ ९॥
हूं करूं वीनती जोरि हाथ। मुझ देहु अखै पद पदमनाथ॥

तुम कारन विन जगबंधु देव। इह प्रचुर भवार्णवको न छेव ॥ १० ॥

घत्ता।

कातिक तिथिकारी, तेरसि तपधारी, चैत पूनिम प्रभु ज्ञान वरं।
सुरनरखग आये, गुणगण गाये, 'रामचंद' नमि ध्यान करं ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीपद्मनाथजिनपूजा समाप्ता।

अथ श्रीसुपार्श्वनाथ पूजा।

अडिल्ल।

सुरपति नरपति फणी सभा मधि जिनतणी,
वाणी सुनि प्रतिबुद्ध होय आतम मुणी।
जिन सुपास पद जुगल नमूं सिरनायकैं,

आह्वनादि विधि करूं एकचित थायकैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद ।

हिम सैल निरगत नीर सीतल, स्वच्छ मुनि चित तुल्यही ।
भरि भृंग धार जिनाग्र देवै, लहै सुक्ख अतुल्य ही ॥
भव पास नासि सुपास जिनवर, तरे भवि बहु तार ही ।
मुझ तारि जिनवर सरनि आयो, बिरद तोहि निहार ही ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

घन सार अगर मिलाय केसर, घसौं चंदन बावना ।
जिन पूजि परम उछाह सेती, मोह ताप नसावना ॥ भव पास० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपा० ।

दीरघ अखंडित सरल तंदुल, सोम सम मन हरस ही ।

करि पुंज जिनवर चरन आगै, अखै पद पावै सही ॥ भव पास० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायाक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मंदार मेरु सुपारि जातक, पुहप चक्षु सुहावना ।
जिन पूजि भविजन भाव सेती, समरवाण नसावना ॥ भव पास० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रस खंड उत्तम घृत किये, पकवान सरब सुहावने ।
भरि कनक थार जिनेंद्र पूजै, छुधा रोग नसावने ॥ भव पास० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणिदीप जोति उद्योत सुंदर ध्वांत नासन भान ही ।
भवि कनक भाजन धरि जिनागर लहै अविचल ज्ञान ही ॥ भवपास ॥
ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप धूम्र सुगंध सौरभ, दसों दिसमें ह्वै रहै ।
अति गुंज करत दिगंतराले, पूजि जिन वसुकर्म दहै ॥ भव पास० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वादाम श्रीफल लौंग पिस्ता, मिष्ट खारिक ल्याव ही ।

जिन पूजि परम उछाहसेती, मुक्तिके फल पावही ॥ भव पास० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप-ही ।

शुभ धूप फल ले अर्घ कीजै, 'रामचंद्र, अनूप ही ॥ भव पास० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्रायानर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीतिं स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।

दोहा ।

ग्रीवक मध्य थकी चये, षष्ठी भादव सेत ।

पृथिवीदेवी उर अवतरे, जजूं मोक्षके हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं नि० ।

जेठ सुकल द्वादसि विषै, जनमे सुरपति आय।
नृत्य तूर धुनि करि जजे, मैं जाजि हूं गुण गाय॥ २॥
ओं ह्रीं जेष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणगर्भिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्व०।

तृणवत ताजि साम्राज्य तप, धर्‍यो अरनिमें जाय।
जेष्ठ सुकल द्वादसि विषै, जजूं पदमजुग ध्याय॥ ३॥
ओं ह्री जेष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोभूपगभूषिताय सुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपा०

कृष्ण पष्ठि फाल्गुन हने, घाति कर्म धरि धीर।
कह्यो धर्म लहि ज्ञान जिन, जजूं हरो भव पीर॥ ४॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपा०

सप्तमि फाल्गुन कृष्ण ही, हनि अघाति सिवथान।
गए समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान॥ ५॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय सुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

अथ जयमाल ।

दोहा ।

जिन सुपासके चरनजुग, नमूं हिये धरि ध्यान ।
सकल तत्त्व ज्ञायक सुधी, घायक कर्म वितान ॥ १

चौपाई ।

देव सुपासतणे पद दोय । त्रिविध नमूं अतिहरषित होय ॥
तजि मधि ग्रीव बनारस राय । सुपरतिष्ठ पृथ्वी दे माय ॥ २ ॥
तिनके गर्भ लयो अवतार । सित भादव षष्ठी दिन सार ॥
जन्म जेठ सुदि द्वादसि भयो । बंश इक्ष्वाकु कृतारथ थयो ॥ ३ ॥
हरित वरन तन दुयसै दंड । आयु पूर्व लख वीस अखंड ॥
राज्य पूर्व लख चउदह भोग । जेठ शुकल द्वादसि धरि जोग ॥ ४ ॥

सप्तवरस तप करि वरवीर । ध्यान खडग गहि साहस धीर ॥
घाति हने लहि केवलज्ञान । फागुणवदि छठि तुर्य कल्यान ॥ ५ ॥
सुरपति नरपति खगपति आय । थुति कीन्हीं किम कहैं बनाय ॥
पै तुम भक्ति थकी नरनाथ । करूं निलज ह्वै धरि सिर हाथ ॥ ६ ॥
जय जय दोष अष्टदस हंत । जै जै शिवसुंदरिके कंत ॥
जै जै निराभरण निरमोह । जै जै निर आयुध निरकोह ॥ ७ ॥
जय निरलोभ निराकृतमान । जय शिवपंथ दिखावन भान ।
जय विन कारन जग हितकार । पतित उधारन विरद निहार ॥ ८ ॥
आयो सरनि तिहारी नाथ । इस भवमें डूबत गहि हाथ ।
काढि काढि विलम न करि देव । सही विरद तुम तारन देव ॥ ९ ॥
दोहा—हानि अघाति संमेदतें, फाल्गुण सप्तमि स्याम ।
जिन सुपास शिवकूं गये, नमों जोरि कर "राम" ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीसुपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीचंद्रप्रभजिनपूजा ।

अडिल्ल ।

शुभ अतिसय चौतीस प्रातिहारिज अधिका ही,
अनंत चतुष्टयजुक्त दोष अष्टादस नाही ।
आह्वानन विधि करूं नाय सिर सुधकरि मनही,
लोक मोह तम हरन दीप अदभुत ससि जिनही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद।

हिमसैयल निरगत तोय सीतल मधुर सुरगथकी परै।
भरि भृंग जिनवर चरण आगैं धार दे भवमृति हरै॥
श्रीचंद्रप्रभ दुतिचंदको पद कमल नखससलागि रह्यो।
आतंकदाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप दाह दहंत मोकूं एक छिन न विसारही।
घनसार मलय थकी जिनेसुर पूजिहूं दुख टारही॥ श्री चंद्र० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार उदधि अपार तारन भक्ति प्रभु तुमरी सही।
शुभ सालि पुंज जिनाग्र करि हूं लहूं वसुगुण वसुमही। श्रीचंद्र०

1 पर्वत 2 वीनती 3 समुद्र।

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति सुभट मार प्रचंड सरतें हने सुर नर पसु सबै ।
शुभ कुसुमस्यौं पद पूजिहूं जिन हरो मनमथ दुख अबै ॥ श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह छुधा मोकूं दहै नितही, नैंक सुख नहिं पावही ।
चरु मिष्टतें पद पूजिहूं जिन ! छुधारोग नसावहीं ॥
श्रीचंद्रप्रभु दुति चंदको पद, कमल नख ससि लगि रह्यो ।
आतंक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

अति मोहतम मम ज्ञान ढाक्यो, स्व पर पद नहिं वेवही ।
तुम चरण पूंजूं रतन दीपक, करो तमको छेवही ॥ श्रीचंद्रप्रभुदुति०

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ मलय अगर सुगंध सौरभ, थकी अलि बहु आवहीं ।
जिन चरन आगें धूप खेये, कर्म बसु जरि जावहीं ॥ श्री चंद्रप्रभ॰

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिनेऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ मोख मग अंतराय राक्यौ, मोहि निरबल जानिकैं ।
जिन मोछ द्यौ तव चरण पूंजूं, फल मनोहर आनिकैं ॥ श्रीचंद्र॰

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

जल गंध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघहीं ।
कन थाल अर्घ बनाय सिव सुख, "रामचंद" लहै सही ॥ श्रीचंद्र॰

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्यानक अर्घ ।

दोहा ।

चैत असित पंचमि चये, वैजयंततें इंद ।
उदर सुलछना अवतरे, जजूं त्रिविध गुणवृंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

अंसित पोह एकादसी, जनमे जुत त्रयज्ञान ।
वासव उत्सव करि जजे, जजूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणसहिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

चंद्रपुरी साम्राज्य तजि कृष्ण इकादशी पोह ।
धरयो उग्र तप वनविषै जजूं नाशाहित द्रोह ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणसहिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति ।

फाल्गुण सप्तमि कृष्ण ही घाति हने लहि ज्ञान ।
भव्यातम बोधे घने जजहुं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणसहिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि०

सुकल फागुण सप्तमी, शेष कर्म हनि मोख ।
गये समेदाचल थकी जजूं गुणनके कोख ॥

ओं ह्रीं फागुणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीचंद्रप्रभस्वामिने अर्घं निर्वपामीति

अथ जयमाल ।

दोहा ।

वसुजिन वसु कम हानिके, वसे धरा वसु जाय ।
हरो हमारे कर्म वसु, नमूं अंग वसु नाय ॥ १ ॥

चाल अहो जगत गुरुकी ।

अहो चंद्रदुतिनाथ ज्ञायक अंतरजामी ।
सकल लोक तिरकाल लखे जुगपत गुणधामी ॥
जे चर अचर अपार अनागततीत उपायो ।
लोकालाक निहारि लखे कछु नांहि छिपायो ॥ २ ॥
भाख्या ज्यौं कर माहिं सिधारथ धारि निहारे ।
अथवा अंगुरी रेख लखे कर जुत इकबारे ॥
ऐसौ ज्ञान अपार और कहुं नाहिं सुन्यौ है ।

दरसनको परताप तुहें जिन माहिं भन्यौ है ॥ ३ ॥
मैं दुख पाये घोर चतुरगति माहिं घनेरे ।
तुमतें छाने नाहिं कहा भाखूं जिन मेरे ॥
सब शिशुकी पै बात ख्यात पित जननी जाने ।
मांग्या विन नहिं देहि तोय पय धान न खाने ॥ ४ ॥
देखो करम अपार सुभट जड चेतन नाहीं ।
चेतनकूं करि रंक चोर जिम बांधत जाहीं ॥
सातों अवनिमझारि नरक दारुण दुख देही ।
कोऊ मरनै नाहिं धरम विन निहचै येही ॥ ५ ॥
तिरजंचगति दुख घोर सहे विन संजम धारे ।
भूंख प्यास लदि भार अर दे पीठ मझारै ॥
मारत बधकर धाय जाल मधि उडन पंखेरू ।
पकरि कसाई लेय सरनि नाहिं जिहिबेरू ॥ ६ ॥

मानुष गति कुल नीच विकल इंद्री चखि नाहीं ।
भूपति आगें दौरि तुरक कांधे धरि जाहीं ॥
अहि निशि चौकी देह मेह सिय घाम सहे ही ।
विन दरसन दुख येह घने चिरकाल लहे ही ॥ ७ ॥
कोऊ पुन्यवसाय बाल तपतें सुर थायो ।
हस्ती घोटक बैल महिष असवारी धायो ॥
पूरन आव जु थाय तबै माला मुरझानी ।
आरतितैं तजि प्रान कुसुमभव पाय अज्ञानी ॥ ८ ॥
ऐसे दुःख अपार सहे थिरता नहिं पाई ।
क्रोध मान छल लोभ थकी दिन दिन अधिकाई ॥
तुम करुणानिधि लखि सरनि आयो ततकारी ।
दुखको कर निरवार अहो जगपति जगतारी ॥ ९ ॥

जगनायक जगदीस जगोत्तम दृष्टि निहारो।
मोकूं दास विचारि करो वपुतैं निरवारो॥
या वपुसंगति पाय सहे दुख और न हेती।
यह निश्चै करि जानि लखे तुम वानी सेती॥ १०॥
करम विचारे कौन भूलि मेरी अधिकाई।
अगनि सहै घनघात लोहकी संगति पाई।
ऐसे या वपुसंग सहे दुख और न सेती॥
धनि बानी तुम देव सुनी गुरुके मुख एती॥ ११॥
तुम अनुकंप पसाय, तजूं दुर ध्यान विकारो।
वरनादिकतैं भिन्न, लखूं चिद्रूप हमारो॥
जोतिस्वरूपी देव, वसै याही घट माहीं।
ढूंढूं कौन सथान, लखूं तुम ध्यान उपाहीं॥ १२॥

तेरे ध्यान प्रताप, करम जरि जाय अनंता।
'रामचंद' करि ध्यान, लहै सुख नर गुणवंता॥
इह भव सुक्ख अपार, और भव सुर पद पावैं।
अनुक्रमतैं निरवान, जिनके सुर धर करि गावैं॥ १३॥
दोहा—वसु द्रव्यले सुध भावतैं, जजूं तिहारे पाय।
देहु देव शिव मुझ अबै, अहो चंद द्युति राय॥ १४॥
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचंद्रप्रभपूजा समाप्ता।

अथ श्रीपुष्पदंतजिनपूजा।

अडिल्ल।

तीन गुपति व्रत पंच महा पन समिति ही,
द्वादश तप उपदेश सुधारे संत ही।

पुष्पदंत जिन पाय नमूं सिरनाय ही,

आह्वानन विधि करूं एक चित थाय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

सोरठा ।

क्षीर उदधि सम नीर, भरि झारी त्रय धार दे ।

नसै जन्ममृति पीर, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ।

किष्णागर घनसार, कुंकुम गंध मिलायकैं ।

भव आताप निवार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपा० ।

तंदुल धवल अनूप, मुक्ताफल ससि किरण सम ।
होइ मुक्तिको भूप, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्रायाक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपा०

दोहा ।

कुसुम कल्पतरु लेय, मन मोहै चखि भावने ।
वाण मनोज हरेय, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

खंड घिरत चरु सार, रसना रंजन आनिये ।
होय छुधा निरवार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपा०

दीप रतन मय ज्योति, कंचन भाजनमें धरें ।
ह्वै है ज्ञान उद्योत, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामी०

अगर कपूर मिलाय, धूप दहन शुभ कीजिये ।
अष्ट कर्म जरि जाय, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्रायाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम फल अति सार, नासा नेत्र सुहावने ।
होय मुक्ति भरतार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ अनूप बनाय, "रामचंद्र" वसु द्रव्यतें ।
होय मुकतिको राय, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।

दोहा—फागुन नवमी कृष्ण ही, आरण स्वर्ग विहाय ।
रामादे उर अवतरे, जजूं गर्भदिन ध्याय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णनवम्यां गर्भमंगलशोभिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ।

अगहन सित प्रतिपद विषै, तीन ज्ञानजुत देव ।
जनमे हरि सुरगिरि जजे, हजूं मोक्ष हित एव ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्मकल्याणसहिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सित प्रतिपद अगहन धर्‌यो, तप तजि राज्य महान ।
सुरनरखगपति पद जजे, जजिहूं तपकल्यान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोभूषणभूषिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं नि०

दोयज कार्तिक सुकल ही, घातिकर्म हनि ज्ञान ।
लह्यो धर्म दुविधा कह्यो, जजिहूं ज्ञान कल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

भादव सित अष्टमि हने, सकलकर्म शिवथान ।
गये संमेदाचलथकी, जजिहूं मोछ कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं भाद्रशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणसहिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०

अथ जयमाल ।

दोहा ।

पुष्पदंतके विमल गुण, सकल सुखाकर पेख ।
सुमरि सुमरि वरनन करूं, करि करि हरष विशेष ॥ १ ॥

चाल—सीमंधर जिनवंदिस्यां जगसार हो ।

पुष्पदंत जिनवंदिस्या, जगसार हो काकंदी पुर थान ।
पिता नमूं सुग्रीवजी, जगसार हो, वंश इक्ष्वाकु महान ॥
महान वंश इक्ष्वाकुमें चय, स्वर्ग आरणतैं भये ।
धन देवि रामा मातके उर, कृष्ण फागुनमें थये ॥
गर्भावतार कल्याण सुरपति, ठानि सुरलोकें गये ।
जननी सु सेवा राखि धनपति, मास नव सुखसों गए ॥ २॥
अगहन सित प्रतिपद भली, जग० जनमें सुराधिप जानि ।

मेरु सुदर्शन ले गये, जग सार हो, छीरोदक शुभ आनि ॥
आनि जल अभिषेक करि फुनि, नृत्त तूर वजायये ।
कहि पुष्पदंत पिता सु जननी, सौंपि मंगल गाययें ।
फुनि नृत्य तांडव हरी कीनों, कौन उपमा दीजये ।
जन्म कल्याण उछाह मनमें, राखि नितही जीजिये ॥ ३ ॥
तन शशि सम धनु सत्त भलो, जग सारहो, आयु पूरव लखदोय
लख पूरव सुख भोगिकें, जगसारहो, विरकत भवतैं होय ।
होय विरकत सुकल परिवा, मास मगसिर वन गये ।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच किनों, ध्यानमें प्रभु थिर भये ।
हरि केश पंचम उदधि खेप, आय पद पूजा करी ।
निःकर्म कल्यानक सुमहिमा, पुन्यकरता अघहरी ॥ ४ ॥
वरष चार बहु तप करे, जगसार हो, ध्यान अग्नि परजालि

कातिक सुदि दोयज भली, जगसार हो, घाति चतुक लहु बालि।
लहु बालि घाति उपाय केवल, लोक करवत पेखही।
समवादि सहित विहार करिकें, लहो धर्म विसेखही।
तुम वचन अमृत पानतैं, उर दाह तत खिणही मिट्यो।
लखि ज्ञान कल्यानक सुमहिमा मोह तम मेरो फट्यो॥ ५॥
गणधर हरि मुनि थुति करी जगसार हो सो थुति उनस्यों होय।
धनि दिन यो धनि या घडी जगसार हो धनि धनि मो चखि दोय
मो चखि धनि तुम दरस देख्यो परसि पद धनि कर भये।
धनि धनि ये वसु अंग मेरे ध्यान कर तुमको नये।
धनि भई रसना आज मेरी नाथ थुति तुम करतही।
धनि उभै पद तुम धाम आयो सबै कारज सरत ही॥ ६॥
निर अंबर सुंदर घने, जगसार हो दिग अंबर सुखदाय।

हो को रवि को शसि काय ॥

निराभरण तन अतिलसे, जगसार हो को रवि को शसि काय ॥
शसि काय लांछित अभ्रसम, दिन हीन वृद्धि सदा भमै ।
तुम चरण नखदुति कोट रवि ना, और उपमा को पमै ॥
दरसन ज्ञान चरित्र भूषण, देखि सिव तिय हो खुसी ।
आलिंग देने भई सनमुख, तुहे छवि लखि अति हसी ॥ ७ ॥
निरु आयुध निरभै घने जगसार हो कोप तणों नहीं लेश ।
मोह सुभट किम जय कियो, जगसार हो जुत परिवार महेश ॥
महेश हस्ती ध्यानपै संनाह, संजम अति छिमा ’
प्रपलाय असुरन संग लागो, रही ना तसुकी जमा ॥
सो फेरि निकट न आवही, जुत समर स्वपनके बिखैं ।
हरि हरादिकके हिये, बासी करो जगके अखैं ॥ ८ ॥
तुम गुण गणपति मन धरे, जगसार हो थे वच कहे न जाय ।

ज्यों तारे सब गगनके जगसार हो, ये करमें न समाय ॥
करमें न तारे आय ज्यों, गुरु सहस रसना धार ही।
वरनन कर तो पार पावै, रह्यो पौरष हार ही ॥
मैं बुधिविना थुति करन उमग्यो, होय कैसें नाथजी।
शसिबिंब जलमें बाल विनु बुध, गहै किम गहि हाथजी ॥ ९ ॥
मैं विनवूं कर जोरिकें, जगसार हो, तुम गुणको नहिं बेव।
इस भवमें बहु दुख सहा, जगसार हो, देहु अचल पद देव ॥
देव ! अचल पद देहु मोकूं, सरन चरणन की गही।
करि 'रामचंद्र' लहंत सिव जो, गायसी सुर धरि सही ॥
इत होय मंगल नित नये, घर रिद्धि सिद्धि अनेक ही।
अज्ञान तिमर बिलाय ततछिन, हिये होय विवेक ही ॥ १० ॥

घत्ता ।

अष्टमि सित भाद्रं नाशि अघात्यं पुष्पदंत सिवनयर गये ।
सुर नर खग आये मंगल गाये गिरि समेद कल्याण थये ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीपुष्पदंतजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीशीतलनाथपूजा ।

अडिल्ल ।

शीतल जुग क्रम नमूं धर्म दशधा इम भाख्यौ,
उतिम छिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सु आख्यौ ।
सुनि प्रतिबुध ह्वै भवि मोछि मारगकूं लागे,
आह्वानन विधि करूं चरण जुगकरि अनुरागे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेंद्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद ।

ऋतु शरद इंदु समान अंगसु स्वच्छ शीतल अति घणो ।
भरि हेम झारी धार देवै, नीर हिमवन गिरि तणो ॥
भवि पूजि शीतल नाथ जिनवर, नशैं भवके ताप ही ।
आतंक जाय पलाय शिव तिय, होय सनमुख आप ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ।

कर्पूर नीर सुगंध केसरि, मिश्र चंदन बावना ।
जिनराज पूजे दाह नासे, होय सुख रलियावना ॥ भवि पूजि० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम अखंडित सालि उज्जल, दुरित खंडनकार ही ।
करि पुंज श्रीजिन चरण आगैं, अखै पद करतार ही ॥ भवि पूजि०॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

निरदोष अघ अनेक विधिके, कुसम पावन ल्याय ही ।
जिन चरण चरचि उछाह सेती, समरवाण नसाय ही ॥ भवि पूजि०॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान सुंदर सुरहि घिव करि, षंडरसके मिष्ट ही ।
धरि कनक भाजन पूजि जिनवर, छुधा नासै दुष्ट ही ॥ भवि पूजि० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि दीप जोति उद्योत सुंदर, कनक भाजन धारिये ।
जिन पूजि भवि जन मोह नासै, स्वपर तत्व निहारिये ॥भवि पूजि०

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखंड अगर कपूर उत्तम, कनक धूपायन भरें ।
भवि खेय श्रीजिन चरण आगे, दुष्ट कर्म सबै जरे ॥ भवि पूजि० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल लेहिं उत्तिम मिष्ट मोहन, लौंग श्रीफल आदि ही।
जिन चरण पूजै मुक्तिके फल, लहै अचल अनादि ही ॥भवि पूजि०॥
ओं ह्रीं शीतलनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अति दीप ही।
करि अर्घ धूप समेत फल ले, 'रामचंद्र' अनूप ही ॥ भवि पूजि० ॥
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक अर्घ।

दोहा।

चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युततैं भगवंत।
उदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्षके कंत ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

कृष्ण द्वादसी माघकी, जनमें श्रीजिनराय।

उत्सव करि वासव[1] जजे, मैं जाजि हूं जुग पाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी०

असित माघ द्वादसि तजी, तृणवत भूति महान ।

नगन दिगंबर वन वसे, जजूं दसम भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

पौष चतुरदासि स्याम ही, शुकल ध्यान असि धारि ।

हने कर्म चउ घातिया, जजूं देव मुझ तारि ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

अष्टमि सित आसोजकी, गये मोक्ष भगवान ।

बसु विधि पद पंकज जजूं, मोहि देहु शिवथान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

[1] इन्द्र ।

अथ जयमाला।

दोहा।

सीतल तुम पद कमलजुग, नमूं सीस धरि हाथ।
भवदधि डूबत काढि मो, कर अवलंब दे हाथ॥ १॥

चाल मंगलकी।

सीतल पद जुग नमूं उभैकर जोरिही।
भिदलापुर अवतरे अच्युतपद छोरिही॥
दिढरथ तात विख्यात सुनंदा मायजी।
चैत कृष्ण वसु गर्भ लिये सुखदायजी॥
सुखदाय गर्भकल्याण काजे आय सुरपति सब मिले।
जननी सुसेवा राखि धनपति आप सुरलोकें चले॥
षटमास ले नवमास दिनमें वार त्रिय मणि वर्षये।

गर्भ कल्याण महंत महिमा दोखि सब जन हर्षये ॥
पूर्वाषाढ नछित्र माघ वदि द्वादसी ।
जनमे श्रीजिननाथ नभोगण सब हंसी ॥
चतुरनिकाय मझारि घंटादि बजे भले ।
नये मौलि फुनि पीठ सबै हरिके चले ॥
चले पीठ अवधितें जिन जन्म निश्चै हरि लखो ।
डगि सप्त चालि नुति ठानि बासव मेरु चलनेकूं अखो ॥
जिन लेय पांडुक वनविषैं अभिषेक करि पूजा करी ।
पित मात दे जन्मा कल्याणक ठानि थल चालो हरी ॥ ३ ॥
हेम वरण तन तुंग निवै धनुको सही ।
लछिन श्रीवछ आयु पूर्व लखकी कही ॥
नीति निपुण करि राज तजौ तृणवत तवै ।

लौकांतिक सुर आंय संबोधि चले सबै ॥
संबोधि आये माघ द्वादसि कृष्ण श्रीजिनवन गये ।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच कीनों उपधि तजि कर मुनिभये ॥
सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गायहीं ।
निःकर्म कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पायहीं ॥ ४ ॥
षष्टमि धरि निज ध्यानविषैं प्रभु थिर भये ।
पूरन करि अनिकाज सेयपुरमें गये ॥
क्षीरदान जुत भक्ति पुनर्वसुजी दिये ।
हरिष देन आश्चर्य पंच ततखिणकिये ॥
किये आश्चर्य रत्न वर्षे अर्ध द्वादस कोडि ही ।
धरि ध्यान सुकल उपाय केवल घाति चारो तोडि ही ॥
चर अचर लोक अलोक जुगपति देखि सबहीं वर्निये ।

सुनि इंद्र ज्ञान कल्याण उत्सव पौषवदि चउदसि किये ॥ ५ ॥

योजन साढा सात लसै समश्रादिही ।
लखि मुनिमै गण देव इकासी आदिही ॥
पूरव सहस पचीस हीन ब्रष तीन ही ।
विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही ॥

भई छीन समेद गिरितैं आश्वनी सित अष्टमि सही ।
असि ध्यान सुकल थकी अघाते हने मुक्तितिया लही ।
सब इंद्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगलगायही ॥
हूं नमूं सीतलनाथके पद अमल गुणगण ध्यायही ॥ ६ ॥

बसु खित वसु क्रम हानि बसे वसु गुणमई ।
ज्ञानावरणजघाति विश्व जान्यो सही ॥
देखो लोक अलोक हने द्रशनावली ।

वेदनिको करि नाश अबाध भये बली ॥
फुनि बली सुद्ध चरित्रमें थिर मोह नाशथकी भये।
अवगाह गुण छय आयुतें निरकाय नाम गये थये ॥
गुण अगुरलघु छय गोतके अंतराय छय बलनंत ही।
सिध भये सीतलनाथजी तिरकाल बंदे संत ही ॥ ७ ॥
वसु गुण ये विवहार नियत अनंत ही।
जाणै गणधरपै न वखानत अंतही ॥
ज्यों जलनिधि विस्तार कहैं करते इतौ।
बाल न मरम लहंत न जानत है कितो ॥
कितनौ न जानैं उदधि है, जिम तुहे गुण वरणन करूं।
मैं भक्तिवश वाचाल हूं कछु शंक मन नाहीं धरूं ॥
गुण देहु तेरी करूं विनती अहो सीतलनाथजी ।

"चंद्रराम" सरनि तिहारी आयो जोरि करिके हाथजी ॥ ८ ॥

दोहा।

सीतलके पद कमल जुग, त्रिविध नमूं सुख पाय।
भव दुख ताप मिटाययो, अहो दसम जिनराय ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति शीतलनाथजिनपूजा समाप्ता।

अथ श्रीश्रेयांसनाथ पूजा।

अडिल्ल।

सभालोक सुनिधर्म अंग द्वादस श्रुतिसारे,
भये अनंदित सबै श्रेय जिन भवि बहु तारे।

प्रसमचित्त करि कोप हन्यो अंदु जुगकर ही,

आह्वानन विधि करूं चरण जुग हियमें धरही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

मोतीदाम छंद ।

हिमन उद्भव स्वच्छ गंगोदकं कनक कुंभभरेन सुगंधिकं ।

जनम मृत्यु जरा क्षय कारणं । परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

अगर चंदन कुकम द्रव्यकं भ्रमर कोटि भ्रमांते सुगंधिना ।

प्रचुर दुख भवार्णव नाशनं परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरल सालि अखंड मनोहरं लसत सोममरीचि समानकं ।

सुभग सौख्य अखैपद कारनं पारिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कुसुम ओघ कल्पतरु पावने, हरत चाक्षि सुगंध सुहावने ।

अशुभ काम मनोद्भवनाशनं पारिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस मोदक घेवर बावरं, लसत कांचन पात्र चरोत्तमं ।

प्रचुररोगक्षुधा निरनाशनं, पारिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

कनत कांचन पात्र सुदीपकं, लसत जोति विवर्जित धूम्रही ।

अखिल मोह तिमिर भ्रमन कारनं, पारिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

अगर कृस्न कपूर सुचंदनं, सुरभितागत षटपद वृंदही ।

निचय कर्म हुतासन जारनं, पारिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मधुर श्रीफल चारु इत्यादिही, ललित गंध महारस अद्भुतं।
अतुल सौख्य महाफलदायकं, परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध सु तंदुल पुष्पकं, चरु सु दीप सुधूप फलौघकं।
परम मुक्ति सुथान प्रदायकं, परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

अथ पंचकल्याणक।

दोहा।

पुष्पोत्तरतैं हरि चये, विमला उर अवतार।
षष्टी जेठ असेतही, लयो जजूं अवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

फाल्गुण स्याम इकादसी, जनमे श्रीभगवान।
चतुरनिकाय सुराधिपा, जजे जजूं हितज्ञान ॥ २ ॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

फाल्गुन ग्यारसि कृष्ण ही, तज्यो उपाधि दुखकार।
धर्‌यो ध्यान चिद्रूपकौ, जजूं देहु मति सार ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

माघ अमावसि ज्ञानही, उपज्यो केवल सार।
घाति करम चउ जय कियो, जजूं भवार्णवतार ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं माघामावस्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

सावनसुदि पुनिम गये, हनि अघाति सिवथान।
सुर नर खग तिन मिलि जजे, जजूं मोक्ष कल्यान ॥
ओं ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णमास्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथाय अर्घं निर्व०।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

श्रेय तणे पदकमल जुग, नमूं उभै करजोर ।
प्रचुर इहै भवतार तुम, हो निहचै नहिं ओर ॥ १ ॥

चाल पंचमंगलकी ।

जै जै जै शिरयांस नमूं सिरनायही, चय पुष्पोत्तरथकी सिंघपुर आयही
विमलाउर अवतार जेठवदि छाठि लियौ गर्भकल्याणक इंद्र सबै मिलिकैं कियौ
कीयो गरभ कल्याण सुरपति रुचिकवासिनि पति कह्यौ।
तुम करहु सेवा जननिकेरी छपन, सुन करि सुख लह्यौ ॥
फुनि धनद वर्षा रतनकेरी मास नव षट लौं करी।
वा समै हिरदै बसहु मेरै धन्य दिन धनि वा घरी ॥ २ ॥

फागुण ग्यारसि कृष्ण ज्ञान त्रयजुत भये ।
चले सिंघासन मौलि अवधि लखि हरि नये ॥
सब मिलि उत्सव ठानि इंद्र शत आय ही ।
मेरुशिखर ले जाय सिनान करायही ॥
कराय सनपन पूज कीनी, बसन भूषण धार ही ।
लखि रूप तृपति न इंद्र हूवो सहसलोचन कारिही ॥
नृप विमलके दरबार सुरपति नृत्य तांडव अति कर्‌यौ ।
शिरयांस नाम उचारि वासव पिता लखि आनंद भर्‌यौ ॥ ३ ॥
श्रमजलरहित शरीर आदि संहनन लह्यौ ।
आदि लसै संस्थान धवल श्रोणित कह्यौ ॥
बल अनंत वपु सोभ नहीं मल तन विषै ।
सुभ लच्छिन शुभगंध बैन हितमित अखै ॥

अखै हितमित सहज अतिसै, लहे दस जिन जनमही ।
तन हेम अस्सी दंड आय, सुलाख चवरासी कही ॥
करि राज बरस वियाल लखही, त्यागि तृणवत वन गये ।
सुर असुर फाल्गुण, कृष्ण, ग्यारसि, ठानि उत्सव सब नये ॥ ४

धरत चरित मन ज्ञान जिनेस्व: कूं भयो ।
षष्ठम पूरन ठानि अरिठपुरमें गयो ॥
तहां दयो पयदान नाह नरनंद ही ।
बरसे रतन अपार भयो सुख कंद ही ॥

सुखकंद बरस उभै करयो, तप घोर द्वादश विधि तदा ।
असिध्यान सुक्‍ल थकी हने, त्रउघाति दुस्तर विधि जदा ॥
सुर असुर ज्ञान कल्याण पूजा, ठानि बहु थुति उच्चरी ।
सो द्यौस पावन माघ मावस, सकल मंगलकी घरी ॥ ५ ॥

तब ही केवल ज्ञान भयो लखि धनद ही ।
समोसरण रचि सार लखे सुखवृंद ही ॥
मध्य महा त्रय पीठ कमल पर जिन ठये ।
अंतर अंगुल च्यारि अनंत चतुष्टये ॥
भये अनंत चतुष्ट प्रभु, सिर छत्र तीन विराजही ।
जखि चवर चवसठि करैं, अतिसितथकी सासिद्युति लाजही ।
सुर पुष्पवृष्टिरु बजे दुंदभि, तरु अशोक सुहावनो ।
दिव्यधुनि सुख होत श्रवनन, प्रभामंडल पावनो ॥ ६ ॥
सत योजन सुरभिच्छ व्योमगति हलत ना ।
छाय न आनन च्यारि भौंह चखि चलत ना ॥
सब विद्या परमेस न प्राणीवध ह्वै ।
बढै केस नख नाहिं छुधादि न संभवै ॥

संभवै मागधिभाष सब जनें, तोष षट रितु फल फलै।
सब सत्रु मैत्री अन अट्ठ दह, मुकरभू वृष चल चलै॥
जुतगंधवात गंधोदि बरषा, विमल नभ सुर जै करें।
खित वात सोधैं द्रव्य मंगल, कमल पद तल सुर धरें॥ ७॥
इम गुण जुक्त जिनेस, विहरि भवि तारही।
बरस लाख इकवीस, ज्ञान प्रभु धार ही॥
शेष रह्यो इक मास, समेदाचल ठये।
हनि अघाति सिवथान, पूरण आत्रण गये॥
गये श्रावण सुकल पूनिम, मोक्ष तब हरि आय ही।
वसुभेव पूजा ठानि उतसव, मोक्षमंगल गाय ही॥
सो मोक्षमंगल देहु मोकूं, श्रेयजुत श्रियनाथजी।
'चंद राम' ध्यावैं वंदि सतवै, जोरिकैं जुग हाथजी॥ ८॥

दोहा।

श्रेयतणे पद मो हिये, तिष्ठौ आठौं जाम।
मो हिय श्रेयपदां विषै, रहो होय सिव ताम ॥ १६॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रेयांसनाथजिनपूजा समाप्ता।

अथ श्रीवासुपूज्यजिनपूजा।

रोला छंद।

वासपूजि जिन नमूं रतनत्रय सेखर धारयो।
द्वादस तप सिंगार बधूसिव दिष्टि निहारयो ॥
कंठालिंगन दैन लुब्ध है सनमुख आई।
आह्वाननविधि करूं बारत्रय मनवचकाई ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

त्रिभंगी छंद ।

छीरोदधि नीरं, निर्मल सीरं, मिश्रगंध सुभ भृंगभरं ।
जिनवरपद सारं, जजि अविकारं, जनममृत्युके दाहहरं ॥
चंपापुर थानं, सुभ कल्यानं, वासुपूज्य जिनराज वरं ।
वसुविधि करि अरचै, भव दुख विरचै, परचै सब सुख तास घरं ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति सीतल चंदन, दाह निकंदन, केसर अगर कपूर घसौं ॥
सुभ सौरभ आवै, मधुकर धावै, पूजि जिनेश्वर पाप नसौं ॥ चंपा० ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सित सालि अखंडं, दुरित विहंडं, सोमसमा मनहर ल्यावैं ।
श्रीजिनपद आगैं, पूज रचावैं, तुरत अखै पद भवि पावै ॥ चंपा० ॥

ओं ह्रीं वासुपूज्यजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरुके ल्यावैं, चक्खि सुहावैं, कुसुम गंध दश दिशि धावे ।
श्रीजिनवर अरचै, सिवतिय परचै, मदनबान लहु नसिजावे । चंपा०

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

चरु मिष्ट मनोहर, घेवर बावर, कनक थाल भर अति प्यारी ।
श्रीजिनवर आगैं पूज रचावैं, हरहु वेदना दुखकारी ॥ चंपापुर थानं०

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ रतन सुदीपक कनकरकाबी, ललित जोति धर प्रभु आगैं ॥
तम मोह नसावै, अति सुख पावै, स्वपर लखैं निज गुणजागैं । चंपा०

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कपूरं, चंदन चूरं, शुभ धूपायन मांहि भरैं ।
श्रीजिनपद आगैं, खेय मनोहर, अष्टकर्म ततकाल जरैं । चंपा०॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ श्रीफल ल्यावैं लौंग मिलावैं, पूंगी खारिक मनहारै।
श्रीजिनपद आगैं, पूज रचावैं लहैं मुक्तिफल सुखकारे ॥ चंपापुर०

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अति निर्मल नीरं गंध गहीरं, तंदुल पुष्प सु चरु लावैं।
पुनि दीपं धूपं फल सु अनूपं अर्घ राम" करि गुण गावैं ॥ चंपापुर०॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक।

दोहा।

महासुक्रतैं चय लयो, श्यामा उर अवतार।
षष्ठी साढ असेत ही, जजूं भवार्णवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ॥

चउदसि फागुण कृष्ण ही, वासवजन्मकल्यान।
कीनौ उत्सव करि महा, मैं जजि हूं धरि ध्यान ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

फाल्गुण चउदस स्यामही, लखि भव अनित असार।
राज त्यागि तप बन धर्यौ, जजूं चरन सुखकार ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं फागुणकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ॥

माघ सुक्ल द्वितिया हने, घाति करम धरि ध्यान।
कह्यौ धर्म केवल भयो, जजूं ज्ञान कल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

भादव चउदसि सुकलही, हनि अघाति भगवान।
लही मोक्ष सुखमय सदा, पूंजू मोक्षकल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ॥

अथ जयमाला।

सोरठा।

अरुन वरन अविकार, वासुपूजि जिनकी छवी।
ध्याऊं भवदधि पार, देहु सुमति विनती करूं ॥ १ ॥

अडिल्ल।

वासुपूजि जिनतने पंच कल्याणही चंपापुरमैं भये नमूं धरि ध्यान ही।
षष्ठी स्याम असाढ गर्भ विजयातने। महासुक्रतैं आय जिनेस्वर ऊपने ॥
फाल्गुणचउद्दसिकृष्ण जन्मप्रभु को भयो तीनूंलोकमझारिमहाआनंदथयो
नये मुकटफुनिपीठ सुरासुरके हले जन्मकल्याणक काजसबैवासवचले ॥
मेरुसिखर लेजाय सनानकरायही वासपूजिधरिनाम पिताघरआयही ॥
तांडवनृत्यमहानशक्रहितधरिकरयौ भूपलख्योवसुदेवमहाआनंदभरयो
सत्तरि धनुष उतगं काय जिमभानही लाखबहत्तर आयमहिषचिह्नजानही
राज करयौ चिरकाल महासुखदायही सबै विनश्वर जानि भावनाभायही

फालगुन चउदसि स्याम देवऋषि आयकैं ॥
पुष्पांजलि सुभ देय संबोधे ध्यायकैं ।
इंद्र सिंगार बनाय कल्याणक तप करयौ ॥
पाडलतरुतल जाय जोग वनमें धरयौ ॥ ६ ॥
मनपरजै भयौ ज्ञान तताच्छिन ही जबै ।
षष्ठम पूरण ठानि असनाहित जिन तबै ॥
पुर सिद्धारथ गये दान सुंदर दयो ।
वरषे रतन अपार हरष अति ही भयो ॥ ७ ॥
बरष एक छदमस्त विविधविध तप करे ।
ध्यान सुकल असिथकी घाति चउ जिन हरे ॥
उपज्यौ केवलज्ञान उभै सित माघही ।
करी धर्मकी वृष्टि मिटयौ भवदाघ ही ॥ ८ ॥

विहरे आरज देश बोधि भविलोग ही ।
गये चंपापुर मांहि निरोध्यो जोग ही ॥
हनि अघाति सिवथान गये जिनराय ही ।
भादव सित चउदसी सुरासुर ध्यायही ॥ ९ ॥
मोक्षकल्याणक थान पूजि उतसव कर्‌यौ ।
मंगल गान उचारि महा आनंद धर्‌यौ ॥
"रामचंद" कर जोरि नमैं करुणापती ।
मोकूं भवतैं तारि अरज सुनियो इती ॥ १० ॥

घत्ता छंद ।

चंपापुर थानं, पंच कल्यानं सुरनरखगवंदत सबही ।
हूं पूजूं ध्याऊं गुणगण गाऊं, वासपूज्य दे सिव अबही ॥ ११ ॥
ओं ह्रीं श्रीवासपूज्यजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
इति श्रीवासपूज्यजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीविमलनाथजिनपूजा ।

रोला छंद ।

परम सरूपी व्रती विवेकी ज्ञानी ध्यानी ।
प्रानी हित उपदेश देय मिथ्यात जधानी ।
सिद्धसुखभोगी विमल पाय वंदू जुग करकें,
आह्वानन विधि करूं त्रिविध त्रिप्रकार उचरिकें ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र ! अत्रमम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

द्रुतविलंबित ।

विमल सीतल सजल सुधारया, जनम मृत्यु जरा छय कारया ।
सकल सौख्य विधानकनायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं ।१।

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय जन्मभृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कृष्ण कपूर सुकुंकुमं रिणित भृंगघटावलि गंधना ।
अखिल दुःख भवादिकनासनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछित उज्जल खंडन तीक्षणं । लसत चंद समान मनोहरं ॥
विगत दुःख सुथान सुदायकं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलप वृक्ष भवेन सुगंधना । कुसुम चारु हरै चखि पावनं ॥
प्रबलबाण मनोद्भव नाशनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस मोदक मिष्ट मनोहरं । सुभग कांचन पात्र सुथापितं ॥
असम दुःख छुधादिविध्वंसनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि उद्योत महातम नाशनं। लसत दीप सुकांचन पात्रकं ॥
अखिल मोह विध्वंसन कारणं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ६ ॥
..ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर चंदनं धूप सुगंधिना। मधुप कोटि रवंत दिगालयं ॥
अशुभ कर्म महा दुठ जारनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपकमिष्ट रसामृत पावनं। सुभग श्रीफल आदि फलौघकं ॥
परम मोक्ष महाफल दायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं। चरु सुदीप सुधूप फलौघकं ॥
परम मुक्ति सुथान विधायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं। ९।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पचकल्याणक ।

दोहा ।

श्यामादे उर अवतरे, सहसरारतैं आय ।
दशमी जेठ असेत ही, जजिहूं हरष उपाय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्टकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकाय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

माघ सुक्ल तिथ चौथिको, जनमे सुरपति आय ।
सुर गिरि सनपन करि जजे, मैं जजिहूं गुण गाय । २ ।

ओं ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

तज्यो राज कंपिला पुरी, श्रीजिनवर वन जाय ।
चौथि माघ सित तप धर्‍यो, जजि हूं तूर बजाय ॥ ३

ओं ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

माघ शुक्ल षष्ठी विषे, हने घातिया जान ।
कह्यो धर्म केवलि भये, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लषठ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

अष्टमि साढ असेत ही, हने अघाति शिवथान ।
गये विमल सुर नर जजे, जाजि हूं मोक्ष कल्यान ॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

विमल विमल मति दीजिये, हो करुणापति मोहि ।
करूं वीनती जोरि कर, नमूं नमूं पद तोहि ॥ १ ॥

(अहो जगत गुरु देवकी चाल)

अहो विमल जिन देव, सुनिज्यो अरज हमारी ।
इह संसार मझारि, और न सरनि निहारी ॥ १ ॥

सुनिय हरि हर देव, काल सबै ही खाये ।
उनको सरनो कौन, आपुनहीं थिर थाये ॥ २ ॥
तुम निरभै ताजि मोह, ध्यान शुकल प्रभु ध्यायो ।
उपन्यो केवल ज्ञान, लोकालोक लखायो ॥ ॥ ३ ॥
समवसरनकी भूति, दोष यातैं लखि भागे ।
सुपनन तो ढिग थाय, असुरनके संग लागे ॥ ४ ॥
धरो जनम नहिं फेरि, मरन नहिं निद्रा नासी ।
रोग नाहि नहिं शोक, मोहकी तोरी फांसी ॥ ५ ॥
विस्मयको नहिं लेश, धीर भयप्रकृति विदारी ।
जरा नांहिं नहिं खेद, पसेव न चिंता टारी ॥ ६ ॥
मद नाहीं नहिं वैर, विषय नहिं रति नहिं कातैं ।
प्यास हनी हनि भूख, अष्टदश दोष न यातैं ॥ ७ ॥

नमूं सीस धरि हाथ, ख्यात देवनके देवा।
छ्यालीस गुण भंडार. करूं प्रभु तेरी सेवा ॥ ८ ॥
नमूं दिगंबर रूप, नमूं लखि निश्चल आसन।
मुद्रा शांति निहारि, नमूं नमि हूं तुम शासन ॥ ९ ॥
नमू कृपानिधि तोहि, नमू जगकरता थे ही।
असरन कूं तुम सरन, हरो भवके दुख ये ही ॥ १० ॥
जामन मरन वियोग, सोग इत्यादि घनेरे।
फेरिन आवैं निकट, करो प्रभु ऐसी मेरे ॥ ११ ॥
तुम लखि दीन दयाल, सरनि हम यातैं आये।
ऐसे देव निहारि, भागितैं तुम प्रभु पाये ॥ १२ ॥
"रामचंद" कर जोरि, अरज करि है जिन ऐसी।
विपति यहै जग मांहि, सबै तुम जानत तैसी ॥ १३ ॥

यातैं कहनी नांहिं, हरो जिन साहिब मेरे।
बिन कारन जग बंधु, तुही अनमतलब केरे ॥ १४ ॥
सरन गहेकी लाज, राखि जगपति जिन स्वामी।
करुणा करि संसार, विमल जिन अंतर जामी ॥ १५ ॥
दोहा—विनती विमल जिनेशकी, जो पढिसी मन लाय।
जनम जनमके पाप सब, ततछिन जाय पलाय ॥ १६ ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ विमलनाथजिनपूजा समाप्ता।

अथ श्रीअनंतनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

बाह्य अभ्यंतर त्यागि परिग्रह जति भये।
बहुजन हित शिवपंथ दिखायो हरि नये ॥

ऐसे अनंत जिनेश, पाय नमि हूं सदा ।

आह्वाननविधि करूं त्रिविध करिकें मुदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

नाराच छंद ।

क्षीर नीर हीर गौर सोम शीत धारया,

मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया ॥

अनंतनाथ पाय सेव मोख्य सौख्य दाय है ।

अनंत काल अमज्वाल पूजतैं नसाय है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंकमादि चंदनादि गंध शीत कारया ।

संभवेन अंतकेन भूरि ताप हारया ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेत इंदु कुंद हार खंड ना अखित्तही।
दुर्ति खंडकार पुंज धारिये पवित्त ही॥ अनंतनाथ०॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायाक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्यावही।
गंध लुब्ध भृंगवृंद शब्द धारि आव ही॥ अनंतनाथ०॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसार ही।
हेम थाल धारि भव्य दुष्ट भूख टारही॥ अनंतनाथ०॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न दीप तेज भान हेमपात्र धारिये।
भवांधकार दुःखभार मूलतैं निवारिये॥ अनंतनाथ०॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

देवदारु कृष्ण सार चंदनादि ल्यावही।
दशांग धूप धूम्रगंध भृंगवृंद धाव ही॥ अनंतनाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफलादि खारिकादि हेमथालमें भरे।
सुष्ट मिष्ट गंधसार चक्खि नासिका हरे॥ अनंत नाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

सलिल शीत अति स्वच्छ मिष्ट चंदन मलियागर।
तंदुल सोम समान पुष्प सुरतरुके ला वर॥
चरु उत्तम अति मिष्ट पुष्ट रसना मनभावन।
मणि दीपक तमहरन धूप कृष्नागर पावन॥
लहि फल उत्तम कणथाल भरि, अरघ रामचंद इम करै।

श्रीअनंतनाथके चरन जुग बसुविधि अरचे शिव बरै ॥
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्यानक ।

दोहा ।

पुष्पोत्तरतैं चय लियो, सूर्यादे उर आय ।
कार्तिक पडिवा कृष्ण ही, जजहूं तूर बजाय ॥ १ ॥
ओं ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०
जेठ असित द्वादशि विषै, जनम सुराधिप जान ।
सनपन करि सुरगिर जजे, जजहूं जनमकल्यान ॥ २ ॥
ओं ह्रीं जेष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा०
जगतराज्य तृणवत तज्यो, द्वादसि जेठ असेत ।
लौकांतिक सुरपति जजे, मैं जजहूं शिवहेत ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं जेष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैत अमावसि अरि हने, घातिकर्म दुखदाय ।
कह्यो धर्मकेवलि भये, जजूं चरण सुखदाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैतअमावसि शिव गये, हनि अघाति भगवान ।
सुरनरखगपति मिलि जजें, जजहुं मोक्षकल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयमाला ।

दोहा ।

काल अनंतानंत भव, जीव अनंतानंत ।
जिन उतपति व्यय ध्रुव कही, नमूंऽनंत भगवंत ॥ १ ॥

चाल—त्रिभुवन गुरु स्वामीजीकी ।

जय अनंत जिनेस्वरजी, पुष्पोत्तरतैं स्वरजी,
सिंघसेन नरेसुरके चय सुत भये जी ॥
सूर्यादे माताजी जग पुण्य विख्याताजी,
तिनके जगत्राता गर्भविषै थये जी ॥ २ ॥
कातिक अंधियारीजी, परिवा अविकारीजी,
साकेत मझारि कल्याणक हरि कियोजी।
षटमास अगारेजी, मणि स्वर्ण घनेरेजी,
वरषे नृपकेरे मंदिर धन जयोजी ॥ ३ ॥
द्वादशि अंधियारीजी जनमे हितकारीजी,
प्रभु जेठमझारि सुरासुर आयकैंजी ।
सुरागिरि ले आये जी, भव मंगल गाये जी,

आभिषेक रचाये पूजे ध्यायकैंजी ॥ ४ ॥
फिर पितुघर लायेजी, नचि तूर बजायेजी,
लखि अंग न माये मातपिता तबैंजी ।
तन हेम महा छविजी, पंचास धनूरत्निजी,
लख तीस कहे कवि आयु भई सबैजी ॥ ५ ॥
नृपपदवी धारीजी, लखि पणदह सारीजी,
सब अनिति विचारि तपोवनकूं गयेजी,
बदि जेठ दुवादसिजी, तप देखि स्वरा रिषिजी,
पद पूजि नये नासि पाप सबै गयेजी ॥ ६ ॥
षष्टम करि पूरोजी, भोजन हित सूरोजी,
पुर धर्म सनूरो आवत देखिकैजी ॥
नवभक्तिथकी पयजी, विसाख तहां दयजी,

मणि विष्टि अखय करि सुरगण पेखिकैं जी ॥ ७ ॥
धरि ध्यान सुकल तबजी, चउ घाति हनै जबजी,
सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी ।
वदि चैत अमावासिजी, जखि भक्ति तुहै वासिजी,
समवादि रच्यौ तसु उपमा भी नहीं जी ।
समशादि जिते भविजी, सुनि धर्म तिरे सब जी,
प्रभु आयु रही जब मास तणी तबै जी ।
संमेद पधारे जी, सब जोग संघारे जी ॥
समभाव विथारि वरी शिवतिय जबैजी ॥ ९ ॥
वसु गुण जुत भूषितजी, भव छारि वसे तितजी,
सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी ।
सुर सब मिलि आयेजी, शिव मंगल गायेजी,
बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणत कीजी ॥ १० ॥

गुण वृंद तुम्हारे जी, बुध कौन उचारे जी,
गण देव निहारे पै वचना कहै जी।
"चंदराम" करै थुतिजी, लघु अंगथकी नुतिजी,
गुण पूरन द्यौ मति मर्म तुहे लहैजी ॥ ११ ॥
प्रभु अरज हमारीजी, सुनिज्यो सुख कारीजी,
भवमें दुखभारी निवारौ हौ धणीजी।
तुम सरन सहाईजी, जगके सुख दाईजी।
शिवदे पितुमाई कहो कबलौं घणीजी ॥ १२ ॥

घत्ता छंद।

इति गुण गण सारं, अमल अपारं, जिन अनंत के हिय धरई।
हनि जरमरणावलि, नासिभवावलि! सिवसुंदरि तत छिन वरई ॥ १३॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ श्रीधर्मनाथजिनपूजा।

रोलाछंद।

सार दरब षट कहे पदारथ नव सुभ भाखे।
सप्त तत्त्व वरनये काय पंचासति आखे॥
लोकतीन थिति कही धर्मजिनवर वृषदायक।
आह्वानन विधि करूं प्रणामि त्रिविधा शिवनायक॥१॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर! संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

छंद मद अवलिप्त कपोल छंद।

अति निर्मल शुचि नीर तीर्थ उद्भव भृंग धारै।
सीतल मिश्रित गंध सुरभितैं मधु झंकारै॥

जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद दुख खंडन।

जजूं चरण धरि भक्ति धर्म जिन सिवके मंडन ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कृस्नागर कसमीरनीर घनसार सुचंदन।

षटपद औघ भमंत सुरभितें दाह निकंदन जनम०॥२॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोम किरण समस्वेत सुद्ध डंडीर अखंडित।

अति निर्मल चखि हरै, सालि सुभ सौरभि मंडित ॥ जनम० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच वर्ण मय कुसुम कल्प तरुके मन भावै।

गंध लुब्ध मधु भमै समरके बाण नसावै ॥ जनममृत्यु० ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्वल ललित पवित्त कनक भाजन चरु धारै।

मधुर घृत रस युक्त छुधा लखतैं निरवारै। जनममृत्यु॰ ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय निर्मित दीप कांति तम औघ विदारै।

विकसत है वरबोध स्वपर लखि गुण बिस्तारै ॥ जनममृत्यु॰ ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अगर कृस्न करपूर सुरभि चंदनके दाहन।

धूप निर्जरा करै हरै अघ है शिव गाहन ॥ जनममृत्यु॰ ॥ ७॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरुके फल भूरि कनक भाजन भरि पावन।

श्रीफल मिष्ट बदाम चक्षुनासामनभावन ॥ जनममृत्यु॰ ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूप मिलावै।

अर्घ 'रामचंद' करै मेलि फल शिवसुख पावै ॥

जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद दुख खंडन।
जजूं चरण धरि भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक।

दोहा।

सर्वारथ सिधितैं चये, गर्भ सुव्रता सार।
तेरसि सित बैशाखकी, लयो जजूं भवतार ॥ १ ॥
ओं ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥
जनम माघ सुदि त्रोदशी, सुरपति लखि इत आय।
सुरगिरि ले सनपनि जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥ २ ॥
ओं ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥
माघ सुकल तेरसि तज्यौ, तृणवत राज महान।

धरचौ धीर तप बन बिषै, जजूं धर्म भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

पौष सुकल पूनिम हने, घाति कर्म लहि ज्ञान ।

कही सकल थिति लोककी, जजूं बोध कल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

जेष्ठ सुकल तिथि चौथि ही, हनि अघाति शिवथान ।

गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं जेष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

बंदूं श्री जिनधर्मके, पदनखमंडन भान ।

ममता-रजनी-हरन दिन, भवदधि तारन जान ॥ १ ॥

चौपाई।

सर्वारथिसिधतैं अहिमिंद, चय रतनागपूरी गुणवृंद।
पिता भानु गुणवंत अपार, मात सुव्रता गर्भ मझारि ॥ २ ॥
आये सित त्रेरसि वैसाख, नये मुकट हरिधरि अभिलाख।
चले सबै सुर जुतपरिवार, गर्भकल्याणक कीनौ सार ॥ ३ ॥
षट नव मास थकी मणिविष्ट, वार तीन दिन माहीं सुष्ट।
करी घनद, सुरि छप्पन पाय, सेवै माताके सुखदाय ॥ ४ ॥
जनम माघ सुदि तेरसि भयो, तीन ज्ञानजुत अचरज थयो।
बाजै घंट सुमनकी विष्ट, इंद्र चले सब नुति करि इष्ट ॥ ५ ॥
माया शिशु धरि शची जिनंद, प्रदछिन दे लीने सानंद।
वासव नमि लीने हरषाय, चले मेरु पांडुक वन जाय ॥ ६ ॥
छीरोदधितैं जल सुभ लाय, सनपन करि भवमंगल गाय।
बाजै साढा बारा कोरि, जाति धुनै करि नृत्त बहोरि ॥ ७ ॥

पूजि पदांबुज पितु घरलाय, तांडव निरत कियो सुरराय।
धर्मनाथ कहि निजथल गये, बाल चंद्रसम बढते भये ॥ ८ ॥
तन कंचन धनु पन चालीस, आयु वरष लख दसकी ईस।
पांच लाख व्रष कीनो राज, कछु कारन लखि धर्मजिहाज ॥ ९ ॥
तृणवत त्याग्यो भावन भाय, देव रिषी नय पूजे पाय।
और सुरासुर खग अवनीस, सिवका ले थापे वन ईस ॥ १० ॥
कचलोंचत उपज्यो मनज्ञान, षष्टम धरि तिष्टे भगवान।
तेरसि माघसुकल सुरराय, करयौ कल्याणक तप सुखदाय ॥ ११ ॥
वर्द्धमानपुर भोजन काज, गये दयो पय धर्मजिहाज।
कोटि अर्धद्वादस मणि धार, भई विष्टि धरसेनि अगार ॥ १२ ॥
वरस एक तप दुर्द्धर धारि, पूनिम पोस ध्यान परजारि।
भस्म घातिया कर वरवीर, केवल ज्ञान उपायो धीर ॥ १३ ॥

वरस अढाईलख उपदेस, भविजन भवतैं तारि असेस।
सेष मास इक आय जु रही, गिरसमेद पहुंचे प्रभु सही ॥ १४ ॥
जोगनिरोधि करे समभाव, हानि अघाति भये सिवराव।
चतुर्निकाय देवता आय, उत्सव कीनों मंगल गाय ॥ १५ ॥
सो मंगल दे जिनपति मोहि, जोरि उभै कर विनवूं तोहि।
जे चर अचर लोकत्रियमांहि। तुमतैं परनाति छानी नांहि ॥ १६ ॥
यातैं मोमनकी सब बात। हो त्रिभुवनपति कर विख्यात।
"रामचंद" विनवै प्रभु तोहि। धर्मनाथ जिन दे शिव मोहि ॥ ७॥

घत्ता छंद।

इति श्रीजिनधर्मं गुणगणपरमं जोभवि मनवचतन गावै।
लहि सुर सुक्खसारं अमल अपारं नर हुय सिव सुख लहु पावै ॥१८॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति धर्मनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १५ ॥

अथ श्रीशांतिनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

शांति जिनेस्वर नमू तीर्थ वसु दुगुण ही,
पंचमचक्री अनंग दुविध षट् सुगुण ही।
तृणवत् रिधि सब छारि धारि तप सिव वरी,
आह्वाननविधि करूं वारत्रिय उच्चरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

नाराच छंद।

सैल हेमतैं पतंत आपिका सुव्यौमही।
रत्नभृंगधारि नीर सीत अंग सोमही ॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजते नसाय हैं ।

अनंत सौख्यसार सांतिनाथ सेय पाय हैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदनादि कुंकमादि गंधसार ल्यावही ।

भृंग वृंद गुंजतैं समीर संग धावही ॥ रोग सोग० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इंदु कुंद हारतैं अपार स्वेत साल ही ।

दुतिं खंडकार पुंज धारिये बिसाल ही ॥ रोग सोग० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचवरन पुष्पसार ल्याइये मनोग्य ही ।

स्वर्न थाल धारिये मनोज नास जोग्यही ॥ रोग सोग० ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

खंड घृत्तकार चारु सद्य मोदकादि ही ।

सुष्ट मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही ॥ रोग सोग०॥५॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जोतिको उद्योत धूम होत ना कदा।

रत्नथाल धारि भव्य मोहध्वांत है विदा ॥ रोग सोग० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्र चंदनादि द्रव्य सार सर्व धार ही।

स्वर्ण धूप दानमें हुतास संग जार ही ॥ रोग सोग० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

घोटकेन श्रीफलेन हेमथालमैं भरैं।

जिनेसके गुणौघ गाय सर्व एनकूं हरैं ॥ रोग ० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

सरद इंदुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृटहारी।

१ पाप।

चंदन दाह निकंद सालि शासितैं दुति भारी ॥

सुर तरुके वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं ।

दीप रतनमय जोति धूपतैं मधु झंकारैं ॥

लहि फल उत्तम अरघ करि सुभ "रामचंद" कन थाल भरि ।

श्रीशांतिनाथके चरण जुग वसु विधि अरचैं भाव धरि ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

सर्वारथ सिधितैं चये, भाद्रव सप्तमि स्याम ।

ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥

ओं ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ॥

जेठ चतुरदसि कृस्नही, जनमे श्रीभगवान ।

सनपन करि सुरपति जजे, मैं जज हूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

जेठ असित चउदसि धर्यौ, तप तजि राज महान ।

सुर नर खगपति पद जजैं, मैं जज हूं भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं जेष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

पोस सुकल ग्यारसि हने, घाति कर्म दुखदाय ।

केवल लहि वृष भाखियौ, जजूं शांति पद ध्याय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

कृस्न चतुरदसि जेठकी, हनि अघाति सिवथान ।

गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ॥

अथ जयमाला ।

सोरठा ।

शांति जिनेस्वर पाय, बंदू मन वच कायतैं ।
देहु सुगति जिनराय, ज्यौं विनती रुचिसौं करौं ॥ १ ॥

चाल—संसार सागरियो माई दोहिलो ।

शांति करम बसुहानिकैं, सिद्ध भये सिव जाय ।
सांति करो सब लोकमें, अरज यहै सुखदाय ॥
सांति करो जगशांतिजी ॥ १ ॥
धन्य नयरि हथनापुरी, धन्य पिता विस्वसेन ।
धन्य उदर अयरा सती, सांति भये सुख देन ॥ सांति० ॥ २ ॥
भादव सप्तमि स्यामही, गर्भकल्याणक ठानि ।
रतन धनद वरषाइये, षट नव मास महान ॥ सांति० ॥ ३ ॥

जेठ असित चउदस विषै, जनम कल्याणक इंद ।
मेरु कर्यौ अभिषेककैं, पूजि नचे सुरवृंद ॥ सांति० ॥ ४ ॥
हेम वरन तन सोहनो, तुंग धनुष, चालीस ।
आयुवरसलख नरपती, सेवत सहस बतीस ॥ शांति० ॥ ५ ॥
षटखंड नवनिधि तियसवै, चउदह रतन भंडार ।
कछुकारण लखिकैं तजे, षणत्रव अथिय अगार ॥ सांति० ॥६॥
देव रिषी सब आयकैं, पूजि चले जिन बोधि ।
लेय सुरां सिवका धरी, बिरछ नंदीस्वर सोधि ॥ सांति० ॥ ७ ॥
कृष्ण चतुरदसि जेठकी, मनपरजै लहि ज्ञान ।
इंद कल्याणक तप कर्यौ, ध्यान धर्यौ भगवान ॥ सांति० ८॥
षष्टम करि हित असनकैं, पुर सोमनस मझार ।
गये दयो पय मित्तजीं, वरषे रतन अपार ॥ सांति० ॥ ९ ॥

मौनसहित वसु दुगुणही, बरस करे तप ध्यान ।
पौस सुकल ग्यारसि हने, घाति लह्यौ प्रभु ज्ञान ॥ सांति०॥१०॥
समवसरन धनपति रच्यौ, कमलासनपर देव ।
इंद्र नरा षटद्रव्यकी, सुनि थिति थुति करि एव ॥सांति०॥११॥
धन्य जुगलपद मोतनौ; आयो तुम दरवार ।
धन्य उभै चखि ये भये, वदन जिनंद निहारि ॥ सांति०॥ १२॥
आज सफल कर ये भये, पूजत श्रीजिन पाय ।
सीस सफल अब ही भयो, धोक्यो तुम प्रभु आय ॥सांति०१३॥
आज सफल रसना भई, तुम गुणगान करंत ।
धन्य भयौ हिय मो तनौ, प्रभुपदध्यान धरंत ॥ सांति०॥ १४॥
आज सफल जुग मो तनौ, श्रवन सुनत तुमबैन ।
धन्य भये बसु अंग ये, नमत लयो अति चैन ॥ सांति०॥१५॥

राम कहै तुम गुणतणा, इंद लहै नहीं पार ।
मैं मति अलप अजान हूं, होय नहीं विसतार ॥ सांति० ॥१६॥
वरष सहस पचीसही, षोडस क्रम उपदेस ।
देय समेद पधारिये, मास रहे इक सेस ॥ सांति० ॥ १७ ॥
जेठ असित चउदसि गये, हानि अघाति सिवथान ।
सुरपति उत्सव अति करे, मंगल मोछि कल्यान ॥ सांति० ॥ १८ ॥
सेवक अरज करै सुनो, हो करुणानिधि देव ।
दुखमय भवदधि तैं मुझै, तारि करूं तुम सेव ॥ सांति० ॥ १९ ॥

घत्ता छंद ।

इति जिन गुणमाला, अमल रसाला जो भविजन कंठै धरई ।
हुय दिवि अमरेस्वर, पुनमि नरेस्वर, शिवसुंदरि तताछिन वरई ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीशांतिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

अथ श्रीकुंथुनाथ जिनपूजा ।

अडिल्ल ।

जे परसंसा करैं राग तासौं नही, करै विरोध न दुष्टथकी दुख ना कही ।
सुद्धातमपै लीन कुंथु जिनकूं नमूं, आह्वान विधि ठानि सबै अघकूं बमूं ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

त्रिभंगी छंद ।

अति आमय दुसतरतैं तृद् थावै, दुख पावैं आतिही भारी ।
तिसनासन कारन पूजन आयो, तीरथको जल भरि झारी ॥
श्रीकुंथु जिनेश्वर आपनसे नर, लखि पोषे षट् धरि करुना ।
मैं काल अनंत अकाज गुमायो, अब तारौ तुम पद सरना ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
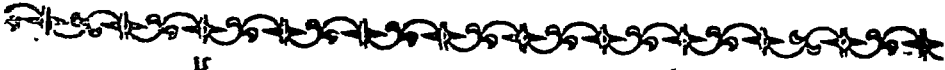
भवआताप अमतैं दाह भयो मुझ, छिनसुख नाहीं का वरना।
घसि कुंकुम चंदन दाह निकंदन, पूजन ल्यायो हरि सरना ॥ श्री कुंथु०
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥
इह संसार अपार उदधिकूं, तारन भक्ति तुहीं नवका।
सित तंदुल ल्यावैं पुंज बनावैं लहु पावैं ते सुख सिवका ॥ श्री कुंथु०॥
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
सुर असुर विद्याधर हरिहर प्रतिहर, ब्रह्मा भ्रष्ट मदन कीने।
सुरतरुके कुसुमथकी पद पूजूं, हरो समर इन दुख दीने ॥ श्रीकुंथु०॥
ओं ह्रीं कुंथुनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
दोष अठारा यातैं होवैं, क्षुधा तृषाति ना नित खातैं।
सद घेवर मोदक पूजन ल्यायो, हरो वेदनादुख यातैं ॥ श्रीकुंथु० ॥५॥
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥
मोह महातम छाय रह्यो मम, ज्ञान हर्‌यो अति दुख दीना।

मणिदीप उजारा तुम ढिग धारा, स्वपर लखै तम ह्वै छीना श्रीकुंथु०॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कारागार इहै वपुमें मुझि, मूंदि महा दुख विधि पारैं ।

विधिइंधन जारन भरि धूपायन, अगर हुतासन संग जारैं॥ श्री कुंथु०॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मोछिनगरमग रोकि रह्यो, अँतराय करम मुझ बल हरिकैं ।

सिव कारण फल ले पूजन आयो, स्वर्ण थाल तुम ढिग भरिकैं श्रीकुंथु०

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु, धूपफलोत्तम अर्घ करैं ।

श्रीजिन गुण गावैं तूर बजावैं, रामचंद सिवरमनि बरैं ॥

श्रीकुंथु जिनेश्वर आपणसे चर, लखि पोखे पद धरि करुना ।

मै काल अनंत अकाज गमायो, अब तारो तुम पद सरना ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

१४६

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

दसमी श्रावण कृस्नही, तजि सरवारथ सिद्धि।
गर्भ लयो श्रीमातिउदर, जजूं देहु सिवरिद्धि॥ १॥

ओं ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०।

प्रतिपद सित वैसाख ही, जनम सुराधिप जानि।
उत्सव करि सुरगिरि जजे, मैं जज हूं भव हानि॥ २॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०॥

तज्यौ राज षट खंडको, तृणवत दिच्छा धारि।
परिवा सित वैशाखही, जजूं भवार्णव तारि॥ ३॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

चैत सुकल त्रितिया हने, घाति करम लहि ज्ञान॥

कह्यो धर्म सुनि भवि तिरे, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमंगलपंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामी० ।

पडिवा सित वैशाख ही, सकल कर्म हानि मोखि ।

गये समेदाचल थकी, जजूं चरण गुण घोखि ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

कुंथु जिनेस्वरके चरन, त्रिविध नमूं कर जोरि ।

धरि दिच्छा षट् कायकूं, पोखे षट्खंड छोरि ॥ १ ॥

चाल—त्रिभुवन गुरु स्वामीकी ।

जय कुंथ जिनेस्वरजी, बंदू परमेस्वरजी, सरवारथ सिद्धथकी, चय आइयेजी। श्रीमाति उर थायेजी, नृप सूर्य सुहायेजी, वदि श्राव-

णदसमी मंगल गाइएजी, ॥२॥ वारणपुर थानाजी, हरि जन्म कल्या-
नाजी, मिलि आए वैसाख सुकल परिवा सबैजी। सुरागिरि ले आये
जी, जल छीर सुल्यायेजी, अभिषेक सिंगार करी पूजा सबैजी॥ ३ ॥
फिर पितु ढिगल्यायेजी, नचि तूर बजायेजी, लखि अंग न माये मात
पिता सबैजी। तन कंचन सोहैजी, रवि कोटिक को है जी, धनुतुंग
पैंतीस अजा लच्छन फबैजी ॥ ४ ॥ वय बाल विहाईजी, नृप पदवी
पाईजी, सुभचक्र इत्यादि भंडार विषै भयेजी। षट् खँडके भूपाजी,
बलधार अनूपाजी, सुर संग मझारि इत्यादि सबै जयेजी ॥ ५ ॥ नृप
सेखर धाराजी, सेवैं पद साराजी, बत्तीस हजार तिया तिगुणी लही-
जी। कछु कारण पायोजी, भव चंचल भायोजी, नवनिधि सिंगार
विभौ विषवत जही जी ॥ ६ ॥ लौकांतिक आयेजी, पद पुष्प चढाये
जी, नुति कर थुति ठानि संबोधि घरां गयेजी। सिवका हरि कीनी

जी, मिलि काँधे लीनीजी, वन जाय तिलक तरु तालि ठये जी ॥७॥
सिंगार उतारेजी, सिर केस उपारेजी, नमः सिद्ध उचारि सुघातम ध्या-
इयोजी। वैशाख उजारेजी, परिवा तप धारेजी, तबही मन ज्ञान
जिनेश्वर पाइयोजी ॥८॥ षष्टम करि पूरोजी, भोजन हित सूरोजी
पुर मंदिर धीर लखत भूपा धरेजी। वरदत्त निहारेजी, नमि तिष्ट
उचारेजी, पयदान सुरां लखि पंचाचर करेजी ॥९॥ षोडस वर्ष ताईंजी
करि तप अधिकाईजी, आतम लवलाय हने चउघातियाजी। केवल
लहि ज्ञानोजी, त्रैलोक्य बखान्योजी, सिततीज कल्यानौ चैत सुरां
कियोजी ॥१०॥ सब आरज विहरेजी, भवितारि घनेरेजी, सब
आयु निवेरि समेदाचल गयेजी। वैसाख सु प्रतिपदजी, अघाति करे
रदजी, तब मोक्ष महापद कुंथुजिना गयेजी ॥११॥ श्रीजिनवर
स्वामीजी, गुणपूरन धामीजी, करुनानिधि नामी अरज सुनो करूंजी।
भववास महावनजी, इसमें सुख ना छिनजी, विन कारन ये जन वैरकरै

डरूंजी ॥ १२ ॥ तुम सरन सहाईंजी, बिन कारन भाईंजी, हो त्रिभुवन राई सरनि तुहे गहूंजी । गुणगण सब थारेजी "रामचंद उचारेजी, हरि बैर हमारे सौख्य सदा लहूंजी ॥ १३ ॥

घत्ता ।

गुणगण अविकारं भवदधि तारं कुंथु जिनेस्वरके अमलं ।
सुर नर खग ध्यावैं सिवपद पावैं, "रामचंद" पदजजि कमलं ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीकुंथुनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १७ ॥

अथ श्रीअरनाथजिनपूजा ।

अडिल्ल ।

ताजि षट खँडभूरिद्ध जीर्ण तृणवत सबै ।
सुद्धातममें लीन भये अरजिन जबै ॥

ध्यानखडगतैं हने करम वसु मैं नमूं।
आह्वानन विधि ठानि सबै अघकूं वमूं॥ १॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्रमम सन्निहतो भव भव। वषट्।

गीता छंद।

सरद रितुके इंदुतैं सित, तीर्थ उद्भव नीरही।
भरि भृंग मणिमय धार देवैं, नसै त्रिविधा पीरही॥
अरनाथ दुस्तर हानि अरि, वसु मोछ निरभै ह्वै गये।
सत इंद्र आय उछाह कीनो, जजूं पुलकित अंग ये॥ १॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घनसार अगर मिलाय कुंकुम, घसत परिमल दिग महै।

चँचरीक शब्द करंत आवैं, पूजि जिनं भवतप जहै ॥ अरनाथ० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सितसालि ससितैं खंड नाहीं, सरल दीरघ आनही।
करि पुंज जिनवर चरन आगैं, लहै अविचल थानही ॥ अरनाथ०॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कुसुम चारु अपार परिमल, कल्पतरुके पावने।
चखि घ्राणहारी भरूं थारी, समरबाण नशावने ॥ अरनाथ० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरखंड घृत पकवान सुंदर, स्वर्ण भाजनमें भरे।
अति मिष्ट रसना भावने जिन पूजि रोग छुधा हरै ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीप जोति उद्योत अदभुत ध्वांत नासन भान ही।

धरि कनकभाजन पूजि जिनपद लहैं केवलज्ञान ही ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

घनसार अगर दसांग धूप सु सुर्न धूपायनि भरैं ।
जिनचरण आगैं खेय भविजन दुष्ट कर्म सबै जरैं ॥ अरनाथ० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम श्रीफल दाख खारिक आदि फल बहु मिष्ट ही ।
भरि कनकथाल जिनाग्र धारैं लहैं सिव फल सुष्ट ही ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर नीर गंध सुगंध तंदुल पुष्प चरु अरु दीपही ।
करि अर्घ धूप फलार्घ लेकरि "रामचंद," अनूप ही ॥

अरनाथ दुस्तर हानि अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये ।
सत इंद्र आय उछाह कीनों जजूं पुलकित अंगये ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणकं ।

दोहा ।

फागुण सुदि त्रितिया चये, अपराजिततैं इंद ।
उदर सुमित्रा अवतरे, जजूं देव गुण वृंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि॰ ।

अगहन चउदसि सुकल ही, जनमें जुत त्रय ज्ञान ।
हरि सनपन कर गिरि जजे, जजहूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा॰

मगसिर दसमी सुकल ही, षट् खंड राज महान ।
तृणवत तजि तप बन धर्यो, जजूं चरण धरि ध्यान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि॰ ।

कार्तिक द्वादसि सुकल ही, घातिकर्म हनि ज्ञान ।

लह्यौ धर्म दुविधा कह्यो, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैत्र अमावस सिव गये, सर्व कर्म हानि देव ।

चतुर निकाय सुरा जजे, मैं जजहूं वसु भव ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयमाला।

दोहा।

अर जिनके पद कमल जुग, बंदू सीस नवाय।

देहु सुमति विनती रचूं, पढ़ै पाप नासि जाय ॥ १ ॥

(चाल— चंद्रप्रभु जिनध्याइज्यौजी)

अर अराति बसु हानिके, सिवतियके पति थाय। सुख अनंत ता संग लहै,

बंदू गुण मन लाय, बुधहो, अर जिन ध्यावो भावसौंजी ॥ २ ॥

ध्यावत सिवपदवी लहै, नर पदकी इह वात । भृत्य होय सुरपति रहै,
देखो फल अवदात बुधहो, अर जिन ध्यावो भावस्योंजी ॥३॥
हस्तनागपुर मैं नमूं, पिता सुदर्शन पाय । मात सुमित्रा कूखिमैं,—
आए त्रिभवन राय, बुध हो. अर जिन ध्यावो भावस्यौं जी ॥ ४ ॥
फागुण सुद त्रितिया करयौ, सुरपति गर्भकल्यान । रतन वृष्टि धन-
पति करी, षट नव मास महान, बुध हो, अर जिन ध्यावौ० ॥ ५ ॥
मागिसर सुदि चउदसि विषै, जनमे सुरपति आय । करि सनपन सुर
गिरि परै, पूजे तूर बजाय. बुध हो, अर जिन ध्यावौ० ॥ ६ ॥
आय असी चउ सहसकी, तन कंचन धनु तीस । मुकटबंध नरपति करै
सेवा सहस बतीस, बुध हो, अर जिन ध्यावौ भावसौंजी ॥ ७ ॥
कछु कारण प्रभु पायकैं, भवतन भोग विनिंदि । देव रिषी सब आयकैं,
बोधि चले पद वंदि, बुध हो, अर जिन ध्यावौ भावसौंजी॥ ८ ॥

मगसिर सुदि दसमी तजे, षट खँड रतनमहान । छिनवैं सहस,
तिया तजी अंबतलैं धारिध्यान, बुधहो, अराजिनध्यावोभावश्यौंजी ॥
षष्टम पूरोकारिचले, गजपुर भोजनकाज । प्रभुके करपरकर कर्यो ।
अपराजितमहराज । बुधहो अराजिनध्यावोभावश्यौंजी ॥ १० ॥
नवधाभक्ति सुरां लखी, करी विष्टि सुखपाय । साढाद्वादसकोटिही ।
मणिसुबरण बरसाय । बुधहो, अराजिनध्यावोभाश्यौंजी ॥ ११ ॥
षोडस वरस करे भले, उग्रउग्रतपसार । कातिकसुदिद्वादसिहने;
घाति करम दुखकार, बुधहो अराजिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १२ ॥
केवल ज्ञान उपायकैं, कह्यौ धर्म भवतार । द्वादस व्रत श्रावगतणे, ।
दस विधिवृष अनगार, बुधहो, अराजिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १३ ॥
चैत अमावश सब सुरा, आये चतुरनिकाय मोख सुथानक पूजिकैं, ।
ध्याये मंगल गाय, बुधहो अराजिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १४ ॥

विहरि समेदा चलगये, आयुरही इक मास । जोगनिरोधि अघातिया,
हानि लीनो सिववास । बुधहो, अरजिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १५ ॥
अबिनासी सुखमय तहां, ज्ञानरूप निरवाध । लखैकालभवकीसबै,
परणति बोध अगाध, बुधहो अर जिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १६ ॥
तुम करुणानिधि जगपति, जगनायक भगवान । रामचंद बिनतीकरै
द्यो मुझ अविचल ज्ञान । बुधहो, अरजिन ध्यावो भावस्यौंजी ।
ध्यावत सिवपदवी लहै, नरपदकीकहाबात । भृत्य होय सुरपति चलै,
देखो फल अवदात, बुधहो अर जिन ध्यावो भावस्यौंजी ॥ १८ ॥

घत्ताछंद ।

अर जिन गुण सारं, विबुध अपारं गावत अहनिसि मन धरई ।
तसु कीरतदेवा, खगनृपसेवा, ठानत उत्सव बहु करई ॥ १९ ॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीअरजिनपूजा समाप्ता ॥ १८ ॥

अथ श्रीमल्लिनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

मोह सनाह मोंज मोंह मदन हनतार हरयौ।
अतुभेश्रा सर मोंघ मोहमट जय करयौ ॥
प्रवल्या लिवका साजि वरांगन लिव वरौ।
आह्वाननविधि करूं प्रणामि जुग लिय धरौ ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र। अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

नाराच छंद।

छंद छीरतैं अपार स्वेत वारहौं।
मिश्र गंध संग धारिकैं निकारि धारहौं ॥

अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यौं ।
अनर्घ द्रव्य ल्याय मल्लिनाथ पूजि मोदस्यौ ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
गंध चंदनादि ले भवादि दाहकूं हरै ।
सरद है सनेह उस्न बूंद एक जो परै ॥ अनेक० ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
राय भोग्यके मनोग्य तंदुलौघ सारही ।
सरल चित्तहार स्वेत पुंज भव्य धारही ॥ अनेक० ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
सुरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्याइये ।
जिनेंद्र अग्र धारिकैं मनोजकूं नसाइये ॥ अनेक० ॥४॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
मोदकादि घेवरादि घृत्त खंडतैं करैं ।

स्वर्न थाल धारतैं छुध्यादि रोगकूं हरैं ॥ अनेक० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप तेज भान हेम थालमें भरैं ।

जिनेंद्र अग्र धारि भव्य मोह ध्वांतकूं हरैं ॥ अनेक० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दसांग धूप चंदनादि स्वर्न पात्रमें भरैं ।

हुतास संग धारि कर्म ओघ भव्यके जरैं ॥ अनेक० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्ट सुष्ठ श्रीफलादि घ्राण चक्खिकूं हरैं ।

मनोग्य चित्तहार पूज जोग्य थालमें भरैं ॥ अनेक० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

छप्पय ।

सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतैं मधु झंकारै ।

तंदुल शशितैं स्वेत कुसुम परिमल विस्तारै ॥

छुधा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै ।

धूप दहै वसु कर्म मोख मग फल परकासै ॥

इम अर्घ करैं सुभ द्रव्य ले, रामचंद कन थाल भरि ॥

श्रीमल्लिनाथके चरण जुग, वसु विधि अरचैं भाव धरि ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

चैत सुकल प्रतिपद चये, अपराजिततें इंद ।

प्रजावती उर अवतरे, जजूं मल्लि गुणवृंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

अगहन सुदि एकादसी, सुरपति चतुरनिकाय ।

सुरगिरि सनपन करि जजे, मैं जजहूं गुणगाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मार्गशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

भवभय करि तृणवत तज्यो, जगतराज धरधीर ।
सित अगहन एकादशी, जजूं धर्यो तप वीर ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं मार्गशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

पौष कृस्न दोयज हने, घातिकर्म दुखदाय ।
केवल लै वृष भाखियो, जजूं ज्ञान गुणगाय ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी० ।

फागुण पंचमि सुकलही, शेष कर्म हनि मोख ।
गये समेदाचल थकी, सिवहित पद गुण घोख ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

बालपनै मल्लिनाथजी, विषय अरनि दुखकार ।
प्रगट भस्म तप अग्नितैं, करैं नमूं पद सार ॥ १ ॥

पद्धरि छंद।

जय तीन जगतपति मल्लिदेव। भव उदधितार तुम सरन एव ॥
जय धर्मतीर्थ करता जिनेस। जगबंधु विना कारन महेस॥ २ ॥
जय तीर्थराज किरपानिधान। जय मुक्तरमा-भरता सुजान ॥
जय स्वयंबुद्ध संभू महान। जय ज्ञानचाक्षि करि विश्व जान ॥ ३ ॥
जय स्वपर हितू मदमोह सूर। दिक्षा कृपाण गहि तुरत चूर ॥
जय तेरह चारित अमल धार। इत राग द्वेष वय आति कुमार ॥४॥
तुम ज्ञानपोत लहि भवि अनेक। भवसिंधु तरे संसय न एक ॥
तुम वचनामृत तीरथ महान। ह्वै पावन जे करि हैं सनान ॥ ५ ॥
दुःकर्म पंक छिन ना रहाय। तुम वैन मेघ करिकैं जिनाय ॥
तुम ज्ञान भान करिकैं महेस। ह्वै तिमर मोहको छय असेस॥ ६ ॥
सिवपंथ भव्य निर्विघ्न जाय। तेरी सहाय निर्वान पाय ॥

बहु जोगीस्वर तुम सरन थाय । निर्वान गए जासी अघाय ॥ ७ ॥

जय दर्शन ज्ञान चरित्त ईस । धर्मोपदेस-दाता महीस ॥
जय भव्यनिकर तारन जिहाज । भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज ॥८॥

त्वं नाम.मंत्र जो चित धरेय । सर्वारथासिधि सिवसौख्य लेय ॥
मैं विनऊं त्रिविधा.जोरि हाथ । मुझ देहु अछैपद मल्लिनाथ ॥ ९ ॥

घत्ता छंद ।

श्रीमल्लि जिनेस्वर नमत सुरेस्वर, वसुविधि करि जुग पद चरचै ॥
दुह जर मरणावलि नसै भवावलि, रामचंद सिवतिय परचै ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीमल्लिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १९ ॥

अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

सकल परीसै जीति ध्यान असितैं हने,
घाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधे घने।
मुनिसुव्रत जिन पाय नमू सिर नायकैं,
आह्वानन विधि करूं चरण लव लायकैं॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

चाल जोगीरासा।

इंदु सरद रितु का अँगतैं सित, मुनि चित सम अविकारी।
सीत सुगँध तृट परसत नासै, तीर्थोदक भरि झारी॥

मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे, दोष दुगुण नव नासै।
लोक सकल कर रेख ज्यौं देखै, ऐसौ ज्ञान प्रकासै ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घसि मलियागर कुंकुमके सँग कृस्नागर घनसारं।
दाहनिकंदन परिमलतैं अलि, धावत वृंद अपारं ॥मुनिसुव्रत॰ ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद किरन सम उज्जल दीरघ, मनरंजन अनियारे।
तंदुल औघ अखंडित लेकरि, पुंज करौं द्रिग हारे ॥ मुनिसुव्रत॰ ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम मनोहर पंच वरण ही, सुरतरुके सुभ ल्यावैं।
गंध सुगंधे घ्राणहि रंजन, गुंजत षटपद आवैं ॥ मुनिसुव्रत॰ ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक गूजा घेवर फैनी, सुरही घृत्त बनावैं।

रसना रंजन रसतैं पूरे, कंचन थाल भरावैं ॥ मुनिसुव्रत० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय जोति मनोहर, सुवरन भाजन धारैं।

ध्वांत नसै जिम मेघ पवनतैं, रवि आतप विसतारै ॥ मुनिसुव्रत० ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृस्नागर मलियागर चंदन, धूप दसांग मगावैं।

स्वर्ण धूपायन संग हुतासन, जारत मधुकर आवैं ॥ मुनिसुव्रत०॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम मनहर बहुनीके, श्रीफल दाख मगावैं।

पूंगी खारिक आदि घनेरे, घ्रानन चक्खि सुहावैं ॥ मुनिसुव्रत० ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल चरु दीपग, धूप कुसुम फल ल्यावैं।

अर्घ करैं चंद वसुविधि ऐसे, सो सिवके सुख पावैं ॥

मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे, दोष दुगुणनव नासे।
लोक सकल कर रेखज्यौं देखैं, ऐसो ज्ञान प्रकासे॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

प्राणत स्वर्ग थकी चये, स्यामा उर अवतार।
सावण दोयज कृस्नही, लयो जजूं पद सार॥ १॥
ओं ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ॥
दसमी वदि वैसाख ही, जनमे जुत त्रय ज्ञान।
सकल सुरासुर गिरि जजे, मैं जजहूं धरि ध्यान॥ २॥
ओं ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥
कृस्न दसमि वैशाख तप, धर्यौ परिग्रह त्याग।

नंगन दिगंबर बन बसे, जजूं चरण जुत राग ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०।

नौमी वदि वैसाखही, हने घाति दुखदाय।

कह्यौ धर्म केवलि भये, जजूं चरण गुनगाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

फागुण द्वादसि कृस्नही, हनि अघाति निरवाण।

गये सुरासुर पद जजे, जज हूं मोक्षकल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं नि०॥

अथ जयमाला।

दोहा।

श्रीमुनिसुव्रत जिनतने, नमूं जुगल पद सार।

भवदधि तारनतरनहो, पतित उधारनहार ॥ १ ॥

चाल—सीमंधरजिनवंदिस्यां जगसारहो।

मुनिसुव्रत जिनवंदिस्यां जगसारहो; नगर कुसागरभूप।
पिता नमूं सुहमित्तजी जगसारहो, श्रीहरिवंस अनूप॥
अनूप श्रावण बीजकारी सुरग प्राणततैं चये।
तव मात स्यामा गर्भ आये लोकत्रयमें सुख भये॥
सुर असुरके नय मुकट कंपे पीठ सब हरि आयही।
गर्भाकल्यान महंत महिमा ठानि मंगल गायही॥१॥
षटनवमास त्रिकालही जगसारहो, बरषे रतन अपार।
बदि दसमी वैसाखकी जगसारहो, जिनजनमें तिहँबार॥
तिहबार घंटा आदि बाजे, सबै सुर मिलि आयही।
जिन लेय पांडुक वन न्हाये, खीर जल सुभल्यायही॥
सिंगार करि पितु मात सौंपे, नृत्य तांडव हरि करयो।
लखि हदै हरषित भये दंपति, नाम मुनिसुव्रत धरयो॥२॥

स्याम वरण तन तुंग है, जगसारहो, बीस धनुष परिमान।
तीस सहस वृष आयु है जगसारहो, कछलांछिनसुभजान ॥
सुभराजपद दससहस कीनो त्यागि तृणवत वन गये।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लोंच कीनो, ध्यानमें प्रभु थिर थये ॥
तबही भयो मनज्ञान सुरनर पूजि पद गुण गाइये।
वैसाख दसमी कृष्ण चंपकवृक्षतलि व्रत ध्याइये ॥ ३ ॥
करि षष्टम मिथुला गये जगसार हो, भोजन हित जिनराय।
विश्वसेननृपजी दयो जगसार हो, पय लखि सुर हरषाय ॥
हरषाय सुर आश्चर्य कीनो पंचाफिरि वन जाय ही।
तप करे ग्यारा वरष द्वादस भांति निरभै थाय ही ॥
वैसाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चउ धरि ध्यान ही।
लहि ज्ञान लोक अलोक पेख्यो, भयो बोध कल्यान ही ॥४॥

समोसरन धनपति रच्यो जगसार हो, मानसथंभत्रिसाल।
चउ चउ गोपुर सोहने जगसार हो, खाई सजल मराल ॥
मराल वन वन कल्पतरु फुनि चैत चंपक अंबही।
धुज सैल सरित सतूप सुर तिय नचै हलत नितंब ही ॥
मधि सभा द्वादस सभामंडप कमल आसन जिन ठये।
चतु वक्त्र अंगुल च्यारि अंतर भई धुनि सुनि हरषये ॥ ५ ॥
तरु असोक त्रिय छत्र है, जगसार हो, चवसठि चवर ढुरंत।
जोजन वानी मागधी जगसारहो दुदुभि मधुर घुरंत ॥
घुरंत दुंदभि सुमन वरषै तुंग आसन त्रिय लसै।
तमपटल भामंडल विध्वंसै कोटिरविकी छवि नसै ॥
वसु प्रातिहारिज सहित आरिज देसके भवि बोधि ही।
संमेदगिरि समभाव प्रणये भूरि जोग निरोधिही ॥ ६ ॥

फागुण द्वादसि कृस्नही जगसारहो, ध्यान सुकल असि धार।
हनि अघाति सिवपुर लयो जगसारहो सुख अनंत भंडार॥
भंडार सुख आविकार अवपु सु हीनवृद्ध नहीं कदा।
त्रैलोककी तिरकाल परणति ज्ञान गार्भित है सदा॥
तित जनम मरन जरा न व्यापै नांहि सेवक भूपही।
चिद्रूप वसुगुणमयी राजै सदा एक सरूप ही॥ ७॥

तुम गुण सु गुरु बरनवै जगसार हो, जिह्वा सहस बनाय।
तोऊ पार लहै नहीं जगसार हो, तो हम पैं किम थाय॥
किम थाय हमपै तुझे बरनन देवगुरु से थकि रहे।
हो कृपानाथ अनाथके पति इहै भव दुख मैं सहे॥
तुम तरण तारण दुखनिवारण तारि भवतैं नाथजी।
"चंदराम,, सरनि निहारि आयो जोरिकैं जुग हाथजी॥

दोहा ।

श्री मुनिसुव्रत देवकी, विनती परम रसाल ।
जो पढसी सुनिसी सदा, पासी मोक्ष विसाल ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा समाप्त ॥ २० ॥

अथ श्रीनमिनाथ जिनपूजा ।

अडिल्ल ।

सुकल ध्यान पर जालि भस्म करि घाति ही,
केवलज्ञान उपाय धर्म कहि ख्याति ही ।
सुनि प्रतिबुध भवि भये नमूं नमि पाय ही,
आह्वानन विधि करूं तिष्ठ इत आयही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

गीताछंद ।

सरति गंगा हिमन परवत थकी पूरव धावही ।

भरत सनमुख होय नभतैं परी कुंडमें आव ही ॥

सो नीर निरमल अतिहि सीतल त्रिषानासन लेय ही ।

नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमल गुणगण धेय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उद्यान निरजन मांहि पन्नग, घाम दुखतैं अति भमैं ।

लखि मलयचंदन दाह कंदन, तासपै सुखतैं रमैं ॥

सो दारु प्रासुक नीरतैं घसि, कनक भाजन लेय ही ॥ नमिनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सरद इंदु समान उज्जल गंधतैं मधुकर भमैं ।

सरल दीरघ नांहि खंडित, जोति मुक्ताकी दमैं ॥
सो अखित जलतैं क्षालि भवि जन, उभै करमैं लेय ही ॥नमिनाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
कनक मणिमय सुघर धरिये, पंचवरन सुहावने ।
जावात्रि आदि अनेक विधिही, अमर तरुके पावने ॥
सो कुसुम अद्भुत घ्राणहारी, लगे मधु कूं प्रेय ही ॥ नमि० ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
खंड घृत पकवान सुंदर, सद्य अनुपम मोहने ।
अति मिष्ट रसना हरै देखत, छुधा डायन कूं हनै ॥
सो सुष्ट मोदक चारु फैनी, स्वर्ण भाजन लेय ही ॥ नमि० ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीप मणिमय जोति सुंदर, धूमवर्जित ललित ही ।
तम मोह पटल विलाय ऐसैं, पवन ज्यौं घन चलत ही ॥

सो कनक भाजन धारि भविजन, चक्खिकूं अति प्रेयही ॥ नमि० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभग धूप दसांग चूरन, स्वर्ण धूपायन भरै ।
तसु सुरभितैं मधु भमैं अतिही, दसौं दिसिमैं रव करै ॥
सो द्रव्य भविजन लेहि उत्तम, अगनिके संग खेय ही । नमि०॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम श्रीफल चारु पुंगी, आदि सुभ रलियावने ।
तसु गंधतैं है घ्राण रंजन, लखे चक्खि सुहावने ॥
कनथाल फलतैं भरों उत्तम, अमर तरुके लेय ही ॥ नमि० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

विमल नीर सुगंध चंदन, अछित स्वेत उजासही ।
वर कुसुम चरुतैं छुधा नासै, दीपतैं तम नासही ॥
"रामचंद" इम अर्घ कीजे, धूप फल सुभ लेय ही ।

नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमल गुणगण धेय ही ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

अपराजिततैं हरि चये, विपुला उर अवतार।
दोयज स्याम असोजही, लयो जजूं भवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०।

दसमी असित असाढही, जनम सुराधिप जान।
सुर गिरि ले सनपन जजे, जजहूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

वदि अषाढ़ दसमी तज्यौ, जगतराज्य तप धार।
सुथिर भए निज ध्यानमें, जजूं चरण जुग सार ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अषाढकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

मगसिर सुदि एकादसी, हने घातिया कर्म ।
कह्यौ धर्म केवलि भये, जजूं चरण तजि भर्म ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामी०

चतुरदसी वैसाख वदि, हनि अघाति सिवथान ।
गये समेदाचल थकी, जजहूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

इंद्र नमत मणि मुकटकी, नेक न दुति दरसाय ।
नमि जिन नखमंडलथकी, त्रिविध नमूं तिनपाय ॥ १ ॥

पद्धरि छंद ।

जय नमि जिनवरके जुगल पाय । प्रणमूं मनवचतन सीसनाय ।
अपराजित नाम विमान सार । चय आये मिथलापुर मझार ॥ २ ॥

विजयारथ तात इख्याक वंस। बिपुला देवी उर सहस अंस।
अस्वनि कुवार दोयज असेत। जिन गर्भ लयो हरि धारि हेत ॥३॥
आये कल्याण गरभादि काज। करि उत्सव चाले देवराज।
धनपति करि है तिरकाल व्रिष्ट। षटमास आदि नव रत्न सुष्ट ॥४॥
जय जिन जनमे त्रय ज्ञान धार। आषाढ कृष्ण दसमी मझार।
आये सब चतुरनिकाय देव। निजनिज वाहन निज नारि एव ॥५॥
तव सची जाय परसूति थान। नमि गुप्त लये जिन तेज भान।
हरि नमसकार करि गोद लेय। सिर छत्र तीन ईसान देय ॥६॥
फुनि सनतकुमार महिंद इंद। सित चवर करैं सोभा अमंद।
सुरगिरि पांडुक वनमांहि जाय। अभिषेक कर्‍यौ जल खीर लाय।७।
साचि पोंछि करै सिंगार सार। बहु तूर बजै तिन को न पार।
बहु विधि पूजा करि निरति ठानि। संतोषे मातापितादि आन ॥८॥

तनहेम धनुष पणदह उतंग । दस सहस वरषकी आयु चंग ।
करि राजतज्यौ भय भीत होय । भवभोग विनस्वर काय जोय ॥ ९॥
तवही लौकांतिक आय देव । संबोधि चले अतिठानि एव ।
सौधर्म आदि सुर खचर भूप । सिवका ले चाले वन अनूप ॥ १० ॥
तरु बकुल तलैं सिरकेस टारि । तजि उपाधि सुधातमध्यानधारि ।
आषाढ कृष्ण दसमी महान । इंद्रादि चले करि तप कल्यान ॥ ११ ॥
करि षष्टम नगरी सुजग मांहि । अन काज गये नृपदत्त लखांहि ।
पय दान दियो सुर भक्ति देख । आश्चर्य करे पण विधि विसेख ॥ १२॥
नव मास महातप उग्र ठानि । धरि ध्यान सुकल चउघातिहानि ।
अगहन सित चउथि सुज्ञान भान । उपज्यौ सुर असुर कल्यान ठान
समवादि सहित करिकैं विहार । संमेद ठये वहु भव्यतार ।
बैसाख कृष्ण चौदसि मझारि । सिववधू वरी सु अघाति जारि ॥१४॥

तब चतुरनिकायक देव आय। बसु भेव पूजि बहु पुनि उपाय।
करि उत्सव मंगल मोच्छ ठान। निज थान गये करिके कल्यान॥
जय महा अमल गुण सहित धार। जे लोक बोधदर्पण मझार॥
दर्सन सब जुगपत लखत भूप। बल अनंत काल ध्रुव एकरूप॥१६॥
सुहमंत देस सूच्छम अपार। गुण अगुरलघू हल को न भार॥
तन चर्म कछू अवगाह हीन। नहि आमय अव्याबाध चीन॥ १७॥
गुण अष्ट इहै निहचै अनंत। को बर्नि सकै भुविमांहि संत॥
मैं विनवूं श्रीनमिनाथ देव। मुझ देहु सदा तुम चरण सेव॥ १८॥
हो कृपानाथ जगपति जगीस। तुम तारन तरन निहारि ईस।
मैं सरनि गही मुझ तारि नाथ। "चंद राम" नमै धरि सीस हाथ॥१९॥

घत्ता।

इह नमि गुणमाला, परमरसाला, मन वच तन कंठै धरई।

हुय सिद्ध निरंजन, भव दुख भंजन, अगणित सुख सिव संग करई ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीनमिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ २१ ॥

अथ श्रीनेमिनाथजिनपूजा ।

अडिल्ल ।

घणे जंतु रव कर्‌यौ नेमि सुनि गिरि गये,
  ताजि रजमति भव अनिनि पेखि मुनिवर भये ।
ध्यान खडग गहि हने कर्म सिव तिय वरी,
  आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छंद त्रिभंगी।

निर्मल ल्याय महातीर्थोदक, कनक रतनमय भरि झारी।
मनवचतन सुध करि जिनपद पूजे, नसै जन्म मृति दुखकारी॥
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद बंदू, रजमति सी ततछिन छारी।
पसुवनिकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी॥१॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभ कुंकुम ल्यावैं अगर मिलावैं, चंदनतैं घनसार घसैं।
तसु परसि समीर चलै अति सीतल, महा दाह ततकार नसै।श्रीनेमि०

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभ सालि अखंडित सौरभि मंडित, ससि सम उज्जल अनियारे।
भूपनकूं मोसर मुक्तासी दुति, पुंज करैं भवि मनहारे॥ श्रीनेमि०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम मनोहर घ्राणनके हर, पंचवरन अति सुखकारी।

सुर तरुके पावन चाखि ललचावन, अति मृदुनै भावि भरि थारी।श्रीनेमि

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति मिष्ट मनोहर घेवर फैनी, मोदक गूझा भरि थारी ।

रसनाके रंजन रसके पूरे, छुधा निवारन बलकारी ॥ श्रीनेमि० ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दीप रतनमय जोत मनोहर, कनक रकावीमैं धारैं ।

तम मोह नसै जिम पवनथकी घन, स्वपर लखै गुण विस्तारैं।।श्रीनेमि०

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभ धूप दसांग हुतासनके संग, लै धूपायण मांहि भरैं ।

तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवैं, अष्टकर्म ततकाल जरैं ॥ श्रीनेमि०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुगी दाख बदाम छुहारा, एला श्रीफल जुत ल्यावैं ।

भरि कनक थालमें मनके रंजन, मोच्छ महाफल लहु पावैं॥श्रीनेमि०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल सुच्छ मलियागर चंदन, अछित कुसुम चरु भरिथारी।
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम अर्घ "राम" करि सुखकारी॥
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद बंदू, रजमतिसी ततछिन छारी।
पसुवनकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरिनारी॥९॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

षष्ठी कार्तिक कृस्नही, अपराजित अहमिंद।
चय सिव देव्या उर लयो, जजूं चरण गुणवृंद॥ १॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी०॥

जनमें श्रावण षष्ठि सित, वासव चतुरनिकाय।

सन पन करि सुर गिरि जजे, मैं जजहूं गुणगाय ॥२॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ।

षष्ठी श्रावण सुकल ही, तजि विवाह सुकुमार ।
उर्जयंत गिरि तप धर्यौ, जजूं चरण भवतार ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सुदि कुआर प्रतिपद हने, घाति कर्म दुखदाय ।
घाति कर्म केवल भये, जजूं चरण गुणगाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुकल साढ़ सप्तमि गये, सेष कर्म हनि मोख ।
सिव कल्याण सुरपति करयौ, जजूं चरण गुण घोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं आषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला।

रोला छंद।

लखि अनित्य भव तज्यौ राज तृणवत तप धार्यौ,
करि बहु विधि उपवास सकल आगम विसतार्यौ।
मुनि सुप्रतिष्ठित नमूं भावना षोडस भाये,
करि समाधि अहिमिंद भये तीर्थंकर थाये ॥ १ ॥

पद्धरि छंद।

जय समुद बिजै सिवदेवि माय। श्रीनेमि जिनेस्वर गर्भ आय ॥
तिष्ठे कातिक सुदि षष्ठि देव। गर्भहि कल्याण आये स्वमेव ॥ २ ॥
हरिवंस व्योम मधि सुष्ठु भान। सित श्रावण षष्ठी जनम थान।
सौरीपुरतैं सुरमेरुलेय। जन्माभिषेक करि गुण भनेय ॥ ३ ॥
जय देव महाबलधरन बाल। द्रहप्रचुरनीर मनु कुसुममाल।
जय धीरधुरंधर मेरुशृंग। अति पावन लावनि सकल अंग ॥ ४ ॥

जय दोष निराकृत धर्म घोख । भवतारक संभव करन मोख ।
जय मोहन मूरति सिष्ट पाल । पितु मात पक्ष रवि प्रातकाल ॥ ५ ॥
बहु नृत्य ठानि पितु मातु देय । जय वृद्ध भये गिन राज हेय ।
सित श्रावण षष्ठी जंतु पेखि । भयभीत भये भवतैं विसेखि ॥ ६ ॥
तप धारि तज्यौ परिगह पिसाच । नुति सिद्धोंको करि त्याग वाच ।
गहि ध्यान खडग चउघाति मार । लहि केवल सिवप्रतिपद कुआर । ७ ।
धन देव रच्यौ समवादिसार । जिन अंतरीक करिकैं विहार ।
वन ग्राम नगर पुर सर्वदेस । कहि धर्म भव्य तारे महेस ॥ ८ ॥
भवकूप इहै अघको भँडार । तिसमें दुख है सुख ना लगार ।
तुम तारण विरद निहारि देव । मैं सरन गही मुझितारिदेव ॥ ९ ॥
दिन सप्तमि सित आषाढ मोखि । जिन प्रकृति पिचासी सेष सोखि ।
गिरनारि सिखर निर्वाण थान । चंदराम नमै निति धारि ध्यान ॥१०॥

घत्ता छंद।

इह पंच कल्याने सुरपति ठाने, नरपति खगपति निति ध्यावैं।
जो पढ़ै पढ़ावैं सुर धरि गावैं, सो सिवके सुख लहु पावैं॥ ११॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्धं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीनेमिनाथजिनपूजा समाप्ता॥ २२॥

अथ श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

पारस मेरु समान ध्यानमें थिर भये।
कमठ किये उपसर्ग सबै छिनमें जये॥
ज्ञानभान उपजाय हानि विधि सिव वरी।
आह्वानन विधि करूं प्रणामि त्रिविधा करी॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

गीता छंद।

सरद इंदु समान उज्वल स्वच्छ मुनि चित सारसौ।
सुभ मलयमिश्रित भृंग भरिहूं सीत अति ही तुमारसौ॥
सो नीर मनहर तृषा नासन, हिमन उद्‌भव ल्याय ही।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र पूजूं हिदै हरष उपाय ही॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घनसार अगर मिलाय कुंकुम, मलय संग घसाय ही।
अतिसीत होय सनेह उस्न जु, बूंद एक रलाय ही॥
सो गंध भवतपनास कारन, कनक भाजन ल्यायही॥ श्रीपार्श्व०॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सरित गंगा अंबु सींची, सालि उज्वल अति घनी।
दुति धरै मुक्ताकी मनोहर, सरल दीरघ जुत अनी॥

सो अछित औघ अखंड कारन, अखै पदकूं ल्याय ही ॥ श्रीपार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

कनकनिर्मय रतन जडिये, पंच वरन सुहावने ।
प्रसूत सुंदर अमर तरुके, गंधजुत अति पावने ॥
सो लेय समरनिवारकारण, घ्राण चक्खि सुहाय ही ॥ श्रीपार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

लछिमी निवास सरोज उद्भव, तथा सोमथकी झरै ।
आमोद पावन मिष्ट अति चित, अमी भुंजनको हरै ॥
सो चारुरसनैवेद कारण, छुधा नासन ल्यायही ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनक दीप मनोग मणिमय, भानभासुर मोहने ।
तम नसै ज्यौं घन पवन नासै, धूमवर्जित सोहने ॥

मम मोह निविड विध्वंस कारण, लेय जिनगृह आयही ॥ श्रीपार्श्व०

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखंड अगर दसांग धूप, सु कनक धूपायनि भरैं ।
आमोदतैं अलिवृंद आवैं, गूंजतैं मनकूं हरैं ।
वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण, अग्निसंग जराय ही ॥ श्रीपार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति मिष्ट पक्क मनोग्य पावन, चक्खि घ्राणनकूं हरै ।
अलि गुंज करत सुगंध सेती, सुधाकी सरभरि करै ॥
सो फल मनोहर अमरतरुके, स्वर्णथाल भराय ही ॥ श्रीपार्श्व० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सलिल सुच्छ सु अगर चंदन अछित उज्जल ल्यायही ।
वर कुसुम चरुतैं छुधा नासै, दीप ध्वांत नसायही ॥
करि अर्घ धूप मनोग्य फल लै, "राम" सिवसुख दायही ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र पूजूं, हिृदै हरष उपाय हीं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार ।
दोज असित वैसाख ही, लयो जजूं पद सार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं वैसाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

पोह कृस्न एकादसी, तीन ज्ञानजुत देव ।
जनमें हरि सुर गिरि जजे, मैं जजहूं करि सेव ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णाकादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

दुद्धर तप सुकुमार वय, काशी देस विहाय ।
पोह कृस्न एकादसी, धर्‌यौ जजूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिंनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

कृस्न चौथि सुभ चैतकी, हने घाति लहि ज्ञान।
कह्यौ धर्म दुविधा मुदा, जजूं बोध भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

सप्तमि श्रावण सुकल ही, सेष कर्म हनि वीर।
अविचल सिवथानक लयो, जजूं चरण धर धीर ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

अथ जयमाला।

दोहा।

पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल जुगसार।
प्रचुर भवार्णव तुम हर्‌यौ, मुझ तारौ भव तार ॥ १ ॥

चाल—ते साधु मेरे उर वसो मेरी हरहु पातक पीर।

श्री पार्सनाथ जिनेंद्र, बंदू, सुद्ध मन वच काय।
धनि पिता आसासेनजी; धनि धन्य वामा माय ॥

धनि जनम काशी देसमै बानारसी सुभ ग्राम ।
प्रभु पास द्यौ मुझ दासकी सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १ ॥
अतिशय मनोहर सजल जलद समान सुंदर काय ।
मुख देखिकैं ललचाय लोचन नैक नृपति न थाय ॥
पदकमलनखदुतिकवल चपला कोटिरवि छवि खाम । प्रभुपास० ॥२॥
ह्वै अधोमुख पंचाग्नि तपतो कमठको चर कूर ।
तित अगनि जरते नाग बोधे देय बच वृष पूर ॥
वे भये हैं धरनेंद्र पद्मा भवनत्रिक रिधि धाम ॥ प्रभुपास० ॥ ३ ॥
इम उरग मरत निहारिकैं सब अथिर सरन न जोय ।
संसार यो भ्रम जाल है जिम चपल चपला होय ॥
हुं एक चेतन सासतो सिव लहूं ताजिकैं धाम । प्रभुपास ॥ ४ ॥
इम चितवतां लोकांतके सुर आय पूजे पाय ।

परणाम करि संबोधि चाले चितवते गुण ध्याय ॥
धनि धन्य वय सुकुमारमैं तप धर्यो अतिबल धाम । प्रभुपास॰ ॥ ५ ॥
बंदू समै जिन धरी दिछ्या विहारि अहिछिति जाय ।
तित ठये वनमैं दुष्ट वो सुर कमठको चर आय ॥
अतिरूप भीषण धारिकै फुंकार पन्नग स्याम । प्रभु पास॰ ॥ ६ ॥
है तुंग वारण सिंध गरज्यौ उपलरज बरसाय ।
करि अगनि बरषा मेघ मूसल ताडित परलय वाय ॥
प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभय असुरको बल खाम । प्रभु पास॰ ॥ ७ ॥
वाही समै धरणेंद्रको नय मुकुट कंप्यो पीठ ।
हरि आय सिंघान रच्यौ फणमंड कीनों ईठ ॥
तब असुरकरनी भई निरफल अचल जिन जिम धाम ॥ प्रभु पास ।८।
धरि ध्यान जोग निरोधिकैं चउघाति कर्म उपारि ।

लहि ज्ञान केवलतैं चराचर लोक सकल निहारि ॥
समवादि भूति कुवेर कीनी कहै किम बुधि खाम । प्रभु पास० ॥९॥
हरि करी नुति कर जोरि विनती धन्य दिन इह बार ।
धनि घडी या प्रभु पासजी हम लहैं भवकी पार ॥
धनि धन्य वानी सुनी मैं अघनासनी पुनि धाम ॥ प्रभु पास० ॥१०॥
बसु कर्म नासि विनासि वपु सिवनयरि पाई बीर ।
बसु द्रव्यतैं वह थान पूजे टरैं सबही पीर ॥
सो अचल है समेदपैं मम भावहैं वसु जाम । प्रभुपास ॥ ११ ॥
कर जोरिकैं "चँद्राम," भाषैं अहो धनि तुम देव ।
भवि बोधिकैं भवसिंधुतारे तरन तारन टेव ॥
मैं नमत हूं मो तारि अबही ढील क्यों तुम काम । प्रभु पास० ॥१२॥
निति पढै जे नरनारि सबही हरैं तिनकी पीर ।

सुर लोक लहि नर होय चक्री काम हलधर वीर ॥
फुनि सर्व कर्म जु घाति कैं लहि मोख सबसुख धाम ।
प्रभु पास द्यौ मुझ दास की सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ २३ ॥

अथ श्रीमहावीरजिनपूजा ।

अडिल्ल ।

बोध सुद्ध परकासक इक प्रभु भान ही ।
लोक अलोक-मझारि और नहीं आन ही ॥
प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाय ही ।
आहानन विधि करूं विमलगुण ध्याय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीता छंद ।

कर्पूर वासित सरद ससि सम धवल हार तुषारतैं ।
मुनि चित्तसौं अति विमल सौरभि, रवै मधुकर प्यारतैं ॥
सो हिमन उद्भव कुंभ मणिमय, नीर भरि तृट छेयही ।
श्रीवीरनाथ जिनेंद्रके जुग चरण चरचूं ध्येयही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय नीर कपूर सीतल, वरन पूरन इंदही ।
आमोद बहुलि समीरतैं, दिग रवै मधुकरवृंद ही ॥
सो द्रव्य भवतपनासकारन, कनक भाजन लेयही ॥ श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हिमन उद्भव सरति सींची, सालि सित शसि द्युति धरैं ।

दीरघ अखंडित सरल पिंडन, मुक्तसी मनकूं हरैं ॥
करि पुंज कारन अखै पदके, उभै करमें लेयही ॥ श्रीवीर० ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार मेरु सुपारि तरुके, सुमन गंधासक्त ही।
मधुवृंद आवैं भविनके, चखि लखैं होय पवित्त ही ॥
सो समरवाण विध्वंस कारन, कुसुम उत्कर लेय ही। श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पदमा-निवास सरोज आश्रित, सुधाकी आमोदस्यौं।
चित सुधा-भुंजनको तृपाति है, रवै मधुकर मोदस्यौं ॥
सो ही पीयूष छुधा विध्वंसन, चारु चरु कर लेयही ॥ श्रीवीर० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्यमाहि जिनेंद्र महिमा, तेजतैं दरसाय ही।
पाप तम दिगदसौं निवड सु, मूलतैं नासि जाय ही ॥

सो दीप मणिमय तेज भास्कर, कनक भाजन लेय ही । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप संग हुतास जारैं, धूम्र धूज दिगमें ह्वै ।

दिग्पाल चिंतै मनो छिति-धर, नीलसे आवैं इहै ॥

सो मलय परिमल घ्राण रंजन, सुरनिको अति प्रेयही । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभ फलोत्कर पक्क मधुरे, स्वर्णसे मनकूं हरैं ।

आमोद पावन पुंज करहूं, मनोवांछित फल करैं ॥

भरि थाल कणमय अमर तरुके, लखे चाखिकूं प्रेयही । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध इत्यादि द्रव्यले, कमलपद सनमति तने ।

जो जजै ध्यावैं वंदि सतवैं, ठानि उत्सव अति घने ॥

सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थ पदको श्रेयही ।

सुख "रामचंद" लहंत सिवके, अर्घ करि प्रभु ध्येयही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

षष्ठी सुकल अषाढही, पुष्पोत्तरतैं देव ।
चय त्रिसला उर अवतरे, जजूं भक्ति धरि एव ॥ १ ॥

ओं ह्रीं अषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

चैत्र सुकल तेरसि सुरां, कीनों जन्म कल्यान ।
छीर उदधितैं मेरुपै, मैं जज हूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अगहन दसमी कृस्नही, तप धार्यौ वन जाय ।
सुरनरपति पूजा करी, मैं जजहूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

दसमी सित वैसाखही, घाति कर्म चक चूर।
केवल ज्ञान उपाइयो, जजूं चरण गुण भूर ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी० ।

कातिंग वदि मावस गये, शेष कर्म हनि मोख।
पावापुरतैं बीरजी, जजूं चरण गुण घोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

सनमति सनमति द्यौ मुझे, हो सनमति-दातार।
इहै भक्ति पावन जगत, होय अमल विसतार ॥

पद्धरिछंद।

जय महावीर दुति अमल भान। सिद्धारथ चित अंबुज फुलान ॥
जय त्रिसला चखि कुमुदनि अनूप। प्रफुलावनकूं मुख चंदरूप ॥२॥

जय कुंडलपुर जिन जन्मथान । हरिवंस व्योममधि सुष्ठु भान ॥
जय कनक वरन करसप्तकाय । हरि चिह्न बहत्तर वरस आय ॥ ३ ॥
जय इंद्र कह्यौ अति वीर सूर । सुनि देव चल्यौ है सर्प क्रूर ॥
फुंकार ज्वाल विकराल देख । कीडत कुमार भाजे विशेख ॥ ४ ॥
प्रभु धीर महा पंनग अज्ञान । करि कीड़ हर्यौ मदको वितान ।
है प्रगट देव नय पूजि पाय । परसंसि कह्यौ महावीर राय ॥ ५ ॥
लखि पूरव भव अनुप्रेक्ष चिंत । भयभीत भये भवतैं अत्यंत ॥
लौकांत आय थुति पूजि पाय । निज थान गये सुर असुर आय ।६।
रचि सिवका करि उत्सव अपार । वन जाय धरे प्रभु ताजि सिंगार ॥
नुति सिद्ध लौंच कच नगन थाय । धरि षष्टम लय चिद्रूप लाय ।७।
तप द्वादस द्वादस वर्ष ठानि । चउघाति हने गहि खडग ध्यान ॥
जय नंत चतुष्टय लब्ध देव । वसु प्रातिहार्य अतिसै सुमेव ॥ ८ ॥

जय भव्यनिकर भवसिंधु तार । मैं प्रणमूं जुग कर सीस धार ॥
जय समर विटपजारन-हुतास । जय मोहतिमर नासन-प्रकास ॥ ९ ॥
जय दोष अठारा रहित देव । मुझ देहु सदा तुम चरण सेव ॥
हूं करूं विनती जोरि हाथ । भवतारनतरन निहारि नाथ ॥ १० ॥

घत्ता छंद ।

श्री वीर जिनेस्वर नमत सुरेस्वर बसुविधि करि जुगपद चरचं ।
बहु तूर बजावैं गुणगण गावैं "रामचंद" मन अतिहरषं ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीमहावीरजिनपूजा समाप्ता ॥ २४ ॥

रोला छंद ।

कीरति है सफुराय सुराधिप बहु सिरनावैं ।
वृद्धि सिद्धि समरिद्धि बुद्धि बुधिता श्रिय पावैं ।

धर्म अर्थ लहि कामदेव नरपति पदपावैं।
वृषभ आदि जिन जजैं अर्घकरि जे नरध्यावैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

वृषभ आदि चउवीस जिनेस्वर ध्यावही।
अर्घ करैं गुण गायर तूर बजावही ॥
ते पावैं सिव सर्म भक्ति सुरपति करैं।
"रामचंद, सक नाहि कीर्त्ति जग विस्तरैं ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः।

——:०:——

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता।

❋